दिल्ली दूरदर्शन
का
फैसला

ग्रब टी.वी. का प्रचार का[illegible] होने के कारण एक बहुत बड़ी
जनसंख्या दूरदर्शन के कार्य[illegible] देख कर बोर होती है । बोर
होने के देश में कई साधन [illegible] बम्बइया फिल्में देख लो या
भजन कीर्तन में जाम्रो या [illegible]ली बैठे पड़ोसियों की चुगल-
खोरी करो । ग्रब इस सब [illegible]कर में टी.वी. भी ग्रपना चक्कर
लेकर बहती गंगा में हाथ धोने ग्रा पहुंचा है । इन सब
माध्यमों में बड़ा जबर दस्त कम्पोटीशन हो रहा है कि कौन
जनता को सबसे ज्यादा बो[illegible]करता है । खैर समय के बहाव
को देखते हुये दीवाना ने भी [illegible]सला कर लिया है कि ग्रब से वह
टी० वी० प्रोग्रामों की भी [illegible]-कभी मिट्टी पलीद कर लिया
करेगा । इस बार हमने दिल्ली दूर दर्शन के कार्यक्रम 'फैसला'
को लिया है । तो पढ़िये फैसला की पैरोडी ।

जैसा कि ग्रापको पता ही है हम इस कार्यक्रम द्वारा जनता का परिचय ऊल-जलूल मामलों से कराते हैं। यह देखते हैं कि कितने बेवकूफ कानून की कितनी जानकारी रखते हैं । कार्यक्रम शुरू करने से पहले मैं ग्राज के प्रोग्राम में भाग लेने वालों का परिचय करा दूं ।

ग्रसंतोष नौटियाल

इनका परिचय देने की तो जरूरत नहीं है । इनको ग्राप सब ग्रच्छी तरह जानते हैं । फिर भी मैं बता दूं यह हैं भारत के सालीसिटर साहब रामनाथ लक्कड़ ! बेबीसिटर तो ग्रापने सुना होगा लेकिन यह सालीसिटर हैं। शादी के बाद से बीबी की दस साल से छोटी उम्र की सभी बहनों को इन्होंने ही खिलाया है । यह मुकदमे का कानूनी पक्ष ग्रापको समझायेंगे ग्रगर इनकी समझ में ग्राया तो ।
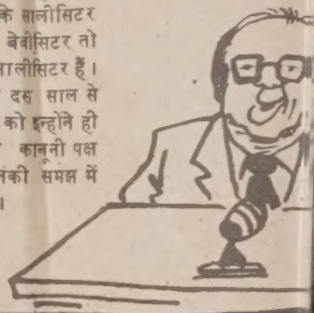
ग्राज हमने दर्शकों में से जिन दो को जजों के तौर पर चुना है उनमें से एक हैं यह मेरी बायीं ग्रोर श्रीमती फूहड़देवी । यह सोलह शुक्रवार के व्रत रखती हैं । इनका ख्याल है कि करामाती अंगूठी पहनने से हर मुकदमा जीता जा सकता है । तेरह बच्चों की मां हैं ।

ग्रौर यह हैं बृजलाल वर्मा । यह सैक्रेटेरियेट में २५ साल[illegible] लोग्रर डिवीजन क्लर्क हैं । दफ्तर में बॉस सबका गुस्सा पर ही उतारता है । इनको बचपन से ही नजले की बीमारी[illegible] उसी कारण बाल उड़ गये हैं । पेट में भी कब्जी की शिका[illegible] रहती है । इनकी बीबी ग्रपने कपड़े इन्हीं से धुलवाती[illegible] सूट के साथ चप्पलें पहन कर दफ्तर जाते हैं । इन्होंने ग्राधी जिन्दगी साइकिल में पंचर लगवाने में लगायी है ।
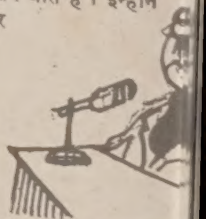
इस बार हमने एक बहुत महत्वपूर्ण मामला चुना है । ग्रगर कोई ग्रादमी मूंछों पर मलाई लगा कर सो जाता है ग्रौर रात को पड़ोसी का चूहा ग्राकर कुतर जाये तो इसका जिम्मेवार कौन है ? क्या चूहे पर दफा ४२० दस लागू हो सकता है ? क्या पड़ौसी चूहे का जिम्मेवार है ?
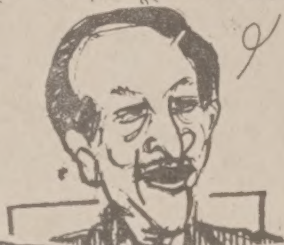
इस सिलसिले में ईसा से दस हजार वर्ष पूर्व झुमरी तलैया में एक बहुत मजेदार वाक्या पेश ग्राया । एक साहब निरंजन राय चौधरी ने मूंछें रखी थीं। एक रात वह मूंछों पर तरावट लाने के लिये मलाई लगाकर सो गये । उनके पड़ोसी के घर से रात को चूहा ग्रा गया ग्रौर निरंजन बाबू की मूंछें कुतर डालीं । उन्हें मूंछों से बहुत प्रेम था । उन्होंने पड़ोसी कमलनाथ से हर्जाना मांगा क्योंकि चूहा उनके घर से ग्राया था । कमलनाथ जी के इन्कार करने पर उन्होंने ग्रदालत में दावा कर दिया । हरजाने के तौर पर दस लाख रुपये मांगे । ग्रब ग्रागे ग्रदालत में वकीलों में जो बहस हुयी वह हम ग्रापको सुनाते हैं···

मी लार्ड, मेरे मुवक्किल निरंजन राम को हर्जाना मिलना ही चाहिये। बगैर मूंछों के इनका मुंह ऐसे ही लगता है जैसे बगैर सींग का गेंडा। क्योंकि चूहा कमलनाथ के घर से आया इसलिये इस हादसे की जिम्मेवारी कमलनाथ की है।
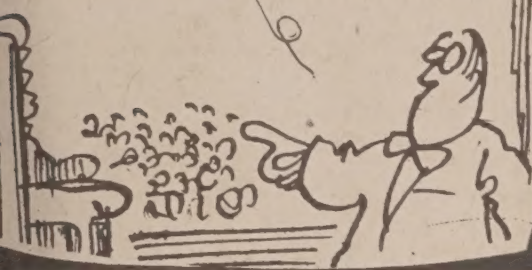
मी लार्ड, वादी पक्ष का दावा है कि उसने मूंछों पर मलाई लगाई थी यह सरासर झूठ है। आजकल मलाई वाला दूध ही कहां आता है? जिसे यह मलाई कहते हैं वह सिंगाड़े का आटा होता है। और आटे की बनी चीज खाना चूहों का जन्म सिद्ध अधिकार है। उसने कोई जुर्म नहीं किया।
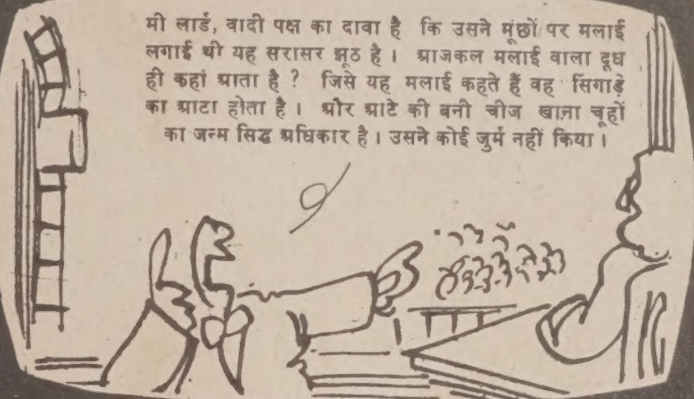
और इस बात का क्या सबूत है कि चूहा मेरे मुवक्किल कमलनाथ के घर से ही गया था? पड़ौस में मकान होने के कारण यह तुक्का लड़ाया गया। हो सकता है चूहा बाहर से आया हो। झुमरी तलैया देखने आया हो। यह देखने कि वह नमूने कौन हैं जो विविध भारती को फर्माइश भेजते हैं।
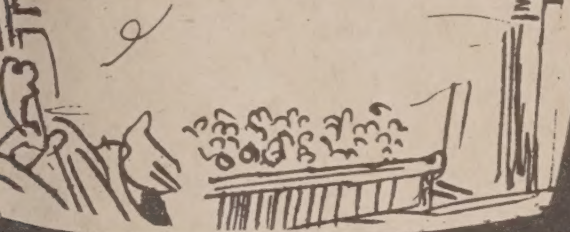
मी लार्ड, माना कि मलाई में सिंगाड़े का आटा था लेकिन उसने आटे के साथ मेरे मुवक्किल की मूंछें क्यों खाईं? वह निरंजन राम की मूंछों को सेम की फलियों का प्रचार समझ कर खा गया? हमारे पास इस बात का सबूत है कि चूहा कमलनाथ के घर का ही था उसका नाम कमलनाथ के राशन कार्ड में दर्ज है।
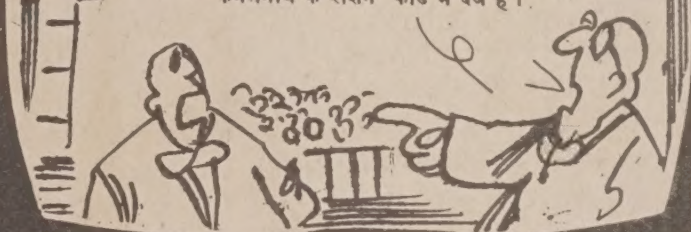
आपने वकीलों की बहस तो सुनली, अब आप दोनों अपनी समझ से मुकदमे का फैसला दीजिये। पहले फूहड़ देवी जी आप।

मेरे ख्याल से तो निरंजन राय के वकील को सजा मिलनी चाहिये क्योंकि उसकी शक्ल उस आदमी से मिलती है जिसने सुबह मेरे लड़के कल्लू के सिर में पत्थर मारा था। मैं तो उसी वक्त कह रही थी उनसे कि पुलिस में रिपोर्ट कर दो लेकिन वह सुनते ही नहीं।
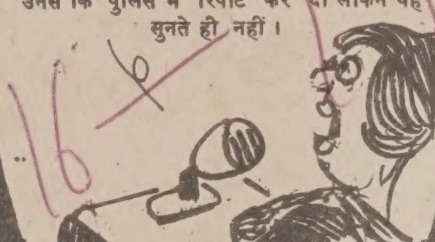
मैं फूहड़ देवी जी से असहमत हूं। मेरे विचार से जज साहब की दो इंक्रीमेंटें बन्द कर देनी चाहियें। क्योंकि जब यह मुकदमा चल रहा था तो वह टेबल के पीछे चुपके-चुपके से मूंगफलियां खा रहे थे।
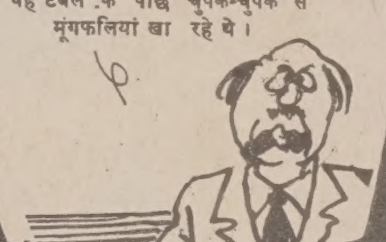
आपने फैसला दे दिया। अब लक्कड़ साहब मुकदमे का कानूनी पक्ष बतायेंगे कि जजों ने क्या फैसला दिया और कानून ऐसे मुकदमों में क्या कहता है।
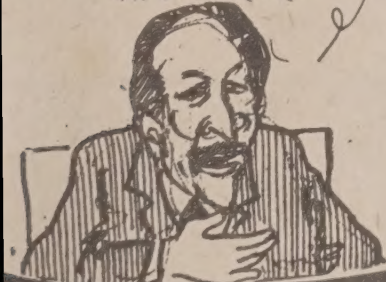
जज का फैसला साफ था। माननीय जज महोदय ने फैसले में सुनाया कि कमलनाथ पर कोई हर्जाने का दावा नहीं हो सकता क्योंकि कल शाम कमलनाथ ने मेरी बीबी को साड़ी भेंट की थी। वह उसे बहुत पसन्द आई। इसके अलावा अदालत महसूस करती है कि कमलनाथ को बेकार में तंग किया गया है इसलिये मुकदमे का खर्चा निरंजन राय को देना होगा। निरंजन राय ने सुबह जो आमों की टोकरी मेरे घर छोड़ी थी उसमें से आधे आम कीड़े वाले निकले।

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

इकामूद्दीन, कोहरी—बीकानेर : दिल की बातें किसी को बताई तो जा सकती हैं, पर क्या दिल में लिखी बातें पढ़वाई भी जा सकती हैं ?

उ० : जी, हां दीवाना पढ़कर और पढ़वा कर, दीवाना अब जनता का दिल बन गया है।

चन्द्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार : चाचा जी, भुट्टो को फांसी लग गई, लेकिन आपने क्षमा-दान की अपील नहीं। हो सकता है जनरल जिया पर आपका दबाव पड़ जाता।

उ० : उन्हें तो पाकिस्तान के लोग ही मिट्टी में दबायेंगे। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो इससे कम दबाव में आना पसन्द नहीं करते।

अशोक मिगलानी—कैथल : आप अपने सिर पर कौन सा तेल लगाते हैं, जो आपके सिर के चार बाल इतनी मुसीबतों के बाद भी अब तक सलामत हैं।

उ० : बालों में कुछ नहीं लगाते, बल्कि जिससे डर है कि उसके हाथ यह बाल नोंच लेंगे, उसे खुश रखने के लिये उसके मस्का लगाते हैं।

धर्मेन्द्र कुमार दुर्घा—रायपुर : चाचा जी, हमने रायपुर में एक चाचा सम्मेलन का आयोजन किया है, क्या आप इस सम्मेलन की शोभा बढ़ाने के लिए रायपुर आना स्वीकार करेंगे ?

उ० : हम तो सभी कुछ स्वीकार कर लेंगे, पर हमारा सर शायद इस सम्मेलन के लिए रायपुर जाना स्वीकार न करे। आप ऐसा कीजिए कि दीवाना का हमारी फोटो वाला पृष्ठ खोल कर सामने रखिए और अपना सम्मेलन आरम्भ कर दीजिए, क्योंकि आम-तौर पर जैसा की अक्सर सम्मेलनों में होता है, अगर वहां सड़े अंडों और गले टमाटरों की बारिश हुई तो दीवाना में छपी हमारी फोटो के सिर पर तो इससे इतना तकलीफ नहीं होगी, जितनी हमारे कंधों पर इस सर को हो सकती है।

एस० बोगटी, "सानू"—अमृतसर : चाचा जी, आपसे तो हर सप्ताह मुलाकात हो जाती है। कभी चाची जी से भी मुलाकात करवाईये।

उ० : क्या करेंगे आप मुलाकात करके ? दिल्ली के रोड रोलर और अमृतसर के रोड रोलर में कोई विशेष अन्तर तो नहीं होता।

अवतार सिंह 'बिट्टू"—भटिण्डा : चाचा जी, आप अपने सम्पादक महोदय से कह कर दीवाना के प्रकाशन का एक नियमित दिन निश्चित करवा दीजिए।

उ० : यह तो कोई पुरानी शिकायत दोहरा रहे हैं आप, अब दीवाना निश्चित समय पर प्रकाशित किया जा रहा है।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : आबादी बढ़ाने के अतिरिक्त भारत ने और किस क्षेत्र में तरक्की की है ?

उ० : जीवित नेता को मरा घोषित करके शोक प्रस्ताव में भगवान से यह प्रार्थना करने में कि उसकी आत्मा को भगवान स्वर्ग में डनलप पिलो के गद्दे पर आराम करने की सुविधायें दे।

जगजीत सिंह राणा—दिल्ली : किसी से प्रश्न करने का मतलब है उसके गिरेबान में झांकना, मैं जिन्दगी भर आपसे ऐसे प्रश्न पूछता रहूं तो आप नाराज तो नहीं होंगे ?

उ० : जिन्दगी है कितने दिन की ? चार दिन, तो आप चार सवाल ही पूछ पायेंगे, इतनी देर गिरेबान में झांकने की नाराजगी किस बात की, हम तो कहते हैं।

> चार दिन की चांदनी, और फेर अंधेरी रात है,
> तब तलक ही इस गिरेबां में तुम्हारी लात हैं।

नरिन्द्र कुमार 'निन्दी'—कपूरथला : इन्सान जीते जी खुद को मुर्दा कब समझने लगता है ?

उ० : आपने भी क्या प्रश्न पूछा है नरिन्द्र जी। आज रोना तो इस बात का है कि मुर्दे अपने आपको जिन्दा समझे हुए हैं।

संजय साहनी—यमुना नगर : चाचा जी, घसीटा राम को हर दीवाना में मार क्यों खानी पड़ती है ?

उ० : क्योंकि वह हर बात में दूसरों को घास खिलाने के चक्कर में रहता है।

बरुन कुमार पाल, मीरगंज—बिहार : चाचा जी, क्या मैं दिल्ली आऊं तो आप मोटू, पतलू, चिल्ली, सिलबिल पिलपिल, घसीटाराम, डा० झटका, चेलाराम, अंगूठा नन्द, परोप-कारी और नैन सुख से मेरी मुलाकात करवा देंगे ?

उ० : अवश्य करवा देंगे। पर इतनी बड़ी फौज से हाथ मिलाने से पहले अपने हाथ का बीमा करवा लीजिए।

विमल कुमार, अम्बाला—छावनी : चाचा जी, यह क्या बकवास है कि अंक १३-१४ में आपने "बन्द करो बकवास" को बन्द कर दिया।

उ० : मुंह का जाएका बदलने के लिए ऐसा किया गया है। हम देखना चाहते थे कि "नसबन्दी" और "शराब बन्दी" के बाद "बकवास बन्दी" का आप पर क्या असर पड़ेगा।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी, "उषा"—रोह-तास : मेरी श्रीमति जी मैके में हैं। मुझे रातों को नींद नहीं आती। बताइए क्या करूं।

उ० : दो चुटकी गम को आंसुओं में घोल कर चाटिए और सबर का घूंट पीजिए। लगता है आप "शादी के चूहेदान" में नये-नये फंसे हैं। कुछ दिन बाद नींद आया हो उतनी देर करेगी जितनी देर श्रीमति जी मैके में रहेंगी।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

विज्ञापनों के लिये दीवाने उपयुक्त स्थान

छाते के अन्दर की ओर

गोगा धूप के चश्मे

शराब के गिलास के अन्दर वाले पैंदे पर

नीडो रेस्टोरेंट
कैब्रे डाँस
नीना, जीना, लीला

VAT 69

क्रिकेट बैट पर

जवानी और ताकत के लिये
स्पेशल तिला
जीरो फार्मेसी

माचिस की डिब्बी पर

पिल्क स्टोर
की
साड़ी पहनिये
पड़ोसिनों को जलाइये
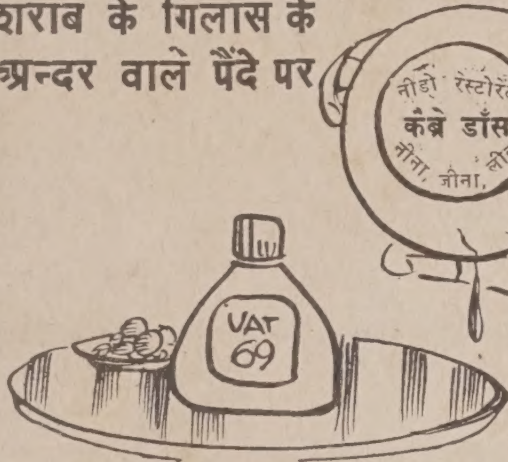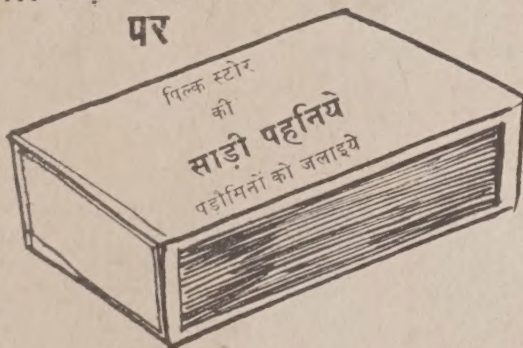
Three
Aces
Club

सस्ती रेडीमेड कमीजें
सान्नू व्हाइट स्टोर
इतनी सस्ती कि आपकी कमीज उतर भी जाये तो भी दुख नहीं होगा।

सैंडल के नीचे

बालों को
सुन्दर रूप
देने के लिये
पिलक्रीम
हेयर टॉनिक

जेब पर

सुपर हिश
रेजर ब्लेड
कापर प्लेटिड
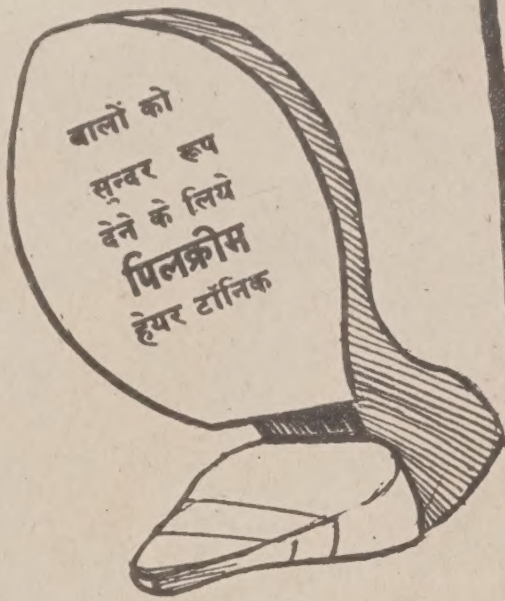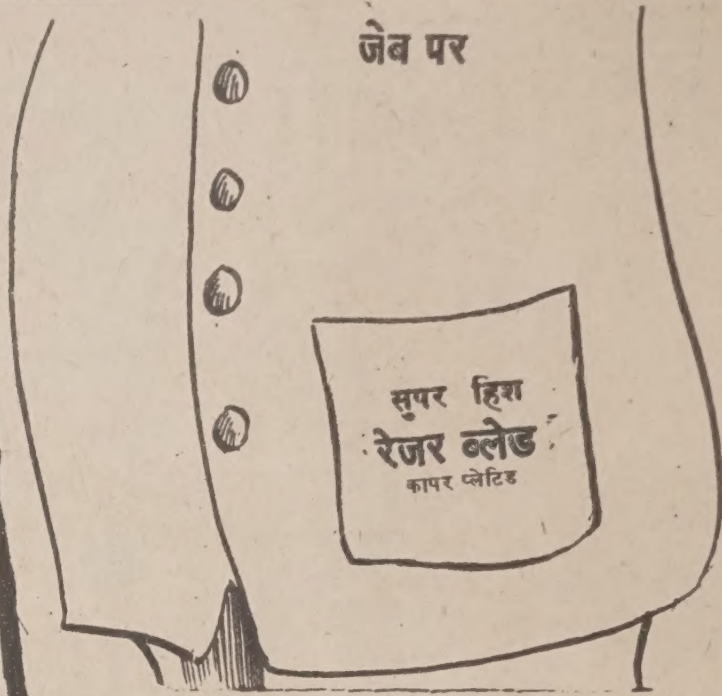
गन्दी नाली के साथ वाली दीवार पर (शराबी प्रायः इसी में गिरते हैं)

शराब पीना सम्मान-इज्जत के लिए
हानिकारक है।

प्रश्न पत्रों के पीछे
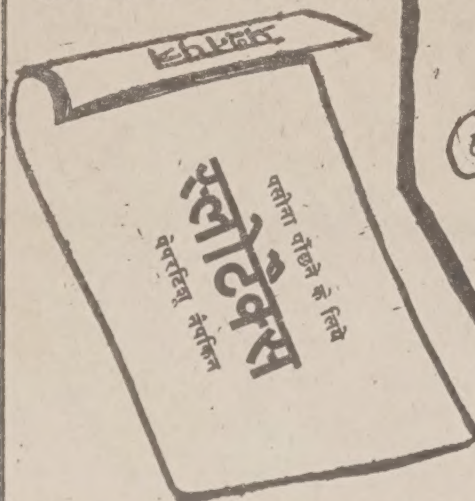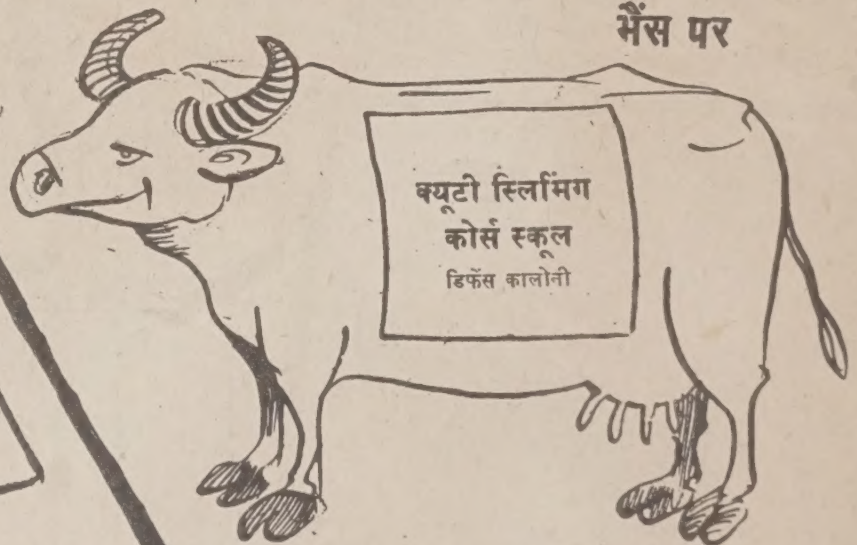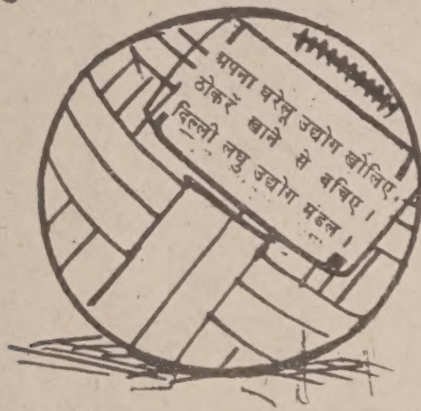
पसीना पोंछने के लिये
क्लोटैक्स
वैफरटिशू नैपकिन

भैंस पर

ब्यूटी स्लिमिंग
कोर्स स्कूल
डिफेंस कालोनी

फुटबाल पर

अपना घरेलू उद्योग खोलिए,
ठोकरें खाने से बचिए।
दिल्ली लघु उद्योग मंडल।

बेलन पर

तलाक मुकदमों के विशेषज्ञ
रामलाल
एम. ए. एल. एल. बी.

चाट के पत्तल पर

(क्योंकि औरतें ही इन्हें खाती हैं)

सोने के जेवरात के विक्रेता
झवेरी ज्यूलर्स
करोल बाग

ऐस्ट्रों पर

(सिगरेट मौत का सामान है)

भोग, किरिया के कार्ड छापने वाले
आजाद प्रेस
दरियागंज
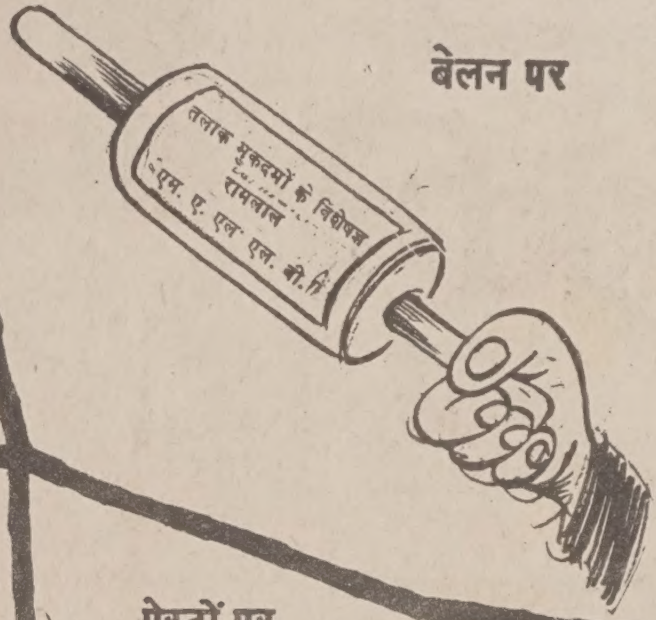
बात-बे-बात की

पापा! आप अँधेरे से डरते हैं?
नहीं तो!

तो क्या आप बाघ से डरते हैं?
नहीं, बिलकुल नहीं।
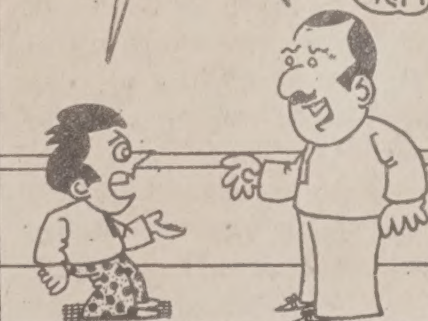
इसका मतलब है कि सिवाय मम्मी के आप किसी से नहीं डरते!

अचलेश

नया धारावाहिक उपन्यास

ठोकर

-लेखिका संगीता

भाग ७

'और.छेड़-छाड़ करो···कसो फब्तियां ···हजार बार समझाया लेकिन तुम बुरी आदत नहीं छोड़ोगे।'

'अरे···जिस आदत को छोड़ दिया जाए वह आदत ही क्या—जिन्दगी जिन्दा-दिली का नाम है।' सुरेन्द्र ने ढीठ बनकर हंसते हुए उत्तर दिया।

फिर दोनों चल पड़े···विनोद अपने घर में घुस गया और सुरेन्द्र आगे बढ़ गया ···उसका घर आगे था। विनोद को अपने कमरे में मेज पर दो पत्र पड़े मिले···उसने पुस्तकें रखीं और कपड़े बदलने लगा···मुंह धोने के बाद छोटी बहन कामिनी से खाने के लिए कहता हुआ मेज के पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया और पत्र पढ़ने लगा—पहला पत्र मासी का था···उन्होंने प्रदर्शनी पर बच्चों और देवर समेत आने के लिए लिखा था··· यह पत्र पढ़कर वह दूसरा पत्र पढ़ना भी भूल गया···उसे मां और पिताजी पर गुस्सा आ रहा था···वह सोच रहा था इन लोगों का 'अतिथि-सत्कार' जाने क्या-क्या रंग लायेगा—पिताजी को दूसरी नौकरी तो मिल गई थी किन्तु आमदनी पहले जैसी नहीं थी···बस, इतना कमा लेते थे कि मुश्किल से घर का खर्चा ही निकल पाता··· जो पहली नौकरी में जोड़ा था वह सब 'उषा मैनशन' खा चुकी थी—लाला दीनानाथ से दो हजार जो ब्याज पर लिया था उसमें दो वर्ष से एक कौड़ी भी ब्याज की चुकाई नहीं गई थी इतना बचता ही कहां था कि ऋण चुकाया जाता···इस पर विनोद और कामिनी की पढ़ाई का खर्चा बढ़ गया था।

यह सब बातें थीं लेकिन पिताजी और मांजी के 'अतिथि-सत्कार' में कोई अन्तर नहीं आया था···मांजी अब भी मेहमानों की सेवा जी खोलकर करतीं। यह अलग बात थी कि मेहमानों के वापस जाने के बाद सौ-सवा सौ का कर्जा बनिए का बढ़ जाता··· और फिर मां का कोई गहना बेचकर वह कर्जा चुकाया जाता।

बड़ी बुआ अब भी साथ ही रहती थीं ···वैसे ही वह न मकान का किराया देतीं, न नल का बिल···न भंगन की तनख्वाह··· बल्कि अब तो बुआ का मिट्टी के तेल का खर्चा भी बच गया था क्योंकि अब उनके घर में बिजली लगी हुई थी जिसका बिल उन्होंने कभी नहीं दिया था। मां का भाई वीरेन्द्र भी उन्हीं के साथ रहता था।

विनोद यह सब कुछ देखता और कुढ़ता रहता लेकिन उसे अपनी पोजीशन का ध्यान था···घर में वह अब भी बच्चा ही कहलाता था इसलिए किसी बात में दखल नहीं दे सकता था···यह दूसरी बात थी अब वह बच्चा नहीं था···सत्रह वर्ष की आयु का लड़का बच्चा नहीं होता···इसलिए वह सब कुछ समझता और देखता था···यह अन्याय देखकर उसे दुःख होता था···लेकिन वह कर भी क्या सकता था सिवाय इसके कि व्यर्थ सोचकर अपनी जान घुलाता रहे—वह बहुत प्रयत्न करता था कि इस विषय को विचारों में न आने दे···जो होता रहेगा और होता आया है उसे वह कैसे रोक सकता है···ठी[illegible] है लाला दीनानाथ का पैसा चक्रवर्ती ब्याज [illegible] हिसाब से तेजी से बढ़ता जा रहा था— किन्तु वह क्या कर सकता था···जब उस[illegible] मां और पिताजी को ही चिन्ता नहीं तो व[illegible] क्यों व्यर्थ चिन्तित हो···इन विचारों [illegible] छुटकारा पाने के लिए उसने अपना अधि[illegible] समय दोस्तों के साथ बिताना आरम्भ क[illegible] दिया क्योंकि एकांत में बैठे रहने से ही य[illegible] विचार उसके मस्तिष्क में आने लगते थे··· दोस्तों में रहता तो यह चिन्ता तो उससे दू[illegible] रहती···लेकिन कोई दिन-रात लगाता दोस्तों में कैसे मग्न रह सकता है···घर [illegible] शाम को और रात को लेटते समय य[illegible] चिन्ताएं फिर उसे आन घेरतीं।

विनोद मासी का पत्र पढ़कर परेशा[illegible] था···कामिनी ने मेज पर खाना लगाते हु[illegible] पूछा—

'क्या सोचने लगे भैया···?'

कामिनी विनोद से तीन वर्ष छोटी [illegible] ···और उसमें बहुत झगड़ा करती थी। 'उ[illegible] दोनों में बिल्कुल ही नहीं बनती थी लेकि[illegible] आज कामिनी कुछ अच्छे मूड में दिखाई [illegible] रही थी।

'तुम्हें क्या···' विनोद ने झगड़ालू स्व[illegible] में कहा, 'सोच रहा हूं कुछ भी।'

'मत बताओ···।' कामिनी का म[illegible] एकाएक बदल गया और वह नाक चढ़ाक[illegible] बोली, 'क्या मैं खुशामद कर रही हूं तुम्हा[illegible] ···मेरी जूती से।'

'चल भाग यहां से···' विनोद ने बै[illegible]

हुए कामिनी की पीठ पर घूंसा जड़ दिया।

'भगवान करे हाथ टूटें···' कामिनी ने कहा और बिसूरते हुए बाहर चली गई।

विनोद ने खाना शुरू कर दिया···दूसरे तीसरे ग्रास पर ही उसे दूसरे पत्र का ध्यान आ गया···विनोद ने ग्रास मुंह में रखा और पत्र खोलकर पढ़ने लगा···यह गांव वाली बुआ का पत्र था···उन्होंने भी प्रदर्शनी पर बच्चों समेत आने के लिए लिखा था—लेकिन यह पत्र पढ़कर विनोद को गुस्सा नहीं आया···बल्कि वह एक सुहानी कल्पना में खो गया···बुआ ने बच्चों समेत आने के लिए लिखा है···तो फूलवती भी आएगी? ···फूलवती एक बार होली से पहले ऐसी गई थी कि फिर वापस ही नहीं आई।

···बुआ स्वयं तो इन पांच वर्षों में कई बार आई थी, लेकिन फूलवती एक बार भी उनके साथ नहीं आई थी···इसका कारण यह था कि फूलवती की सगाई हो चुकी थी···उसके सास ससुर शक्की स्वभाव के थे···उनका कहना था कि फूलवती अब जवान हो चुकी है इसलिए कहीं आना-जाना नहीं चाहिए और चूंकि वह फूलवती के होने वाले सास-सुसर थे इसलिए बुआ को उनकी बात माननी पड़ी थी···और फूलवती पांच वर्ष से उनके घर नहीं आई थी···उसने पांच वर्ष से फूलवती को देखा ही नहीं था···वह स्वयं भी तो कभी गांव नहीं गया था···वह मां से कैसे कहता कि वह फूलवती से मिलने गांव जाना चाहता है···अब तो मां के सामने उसे फूलवती का नाम लेते हुए भी संकोच लगता था···उसे प्रायः बचपन की बात याद आ जाती थी जब मां ने कहा था कि फूलवती से तेरी शादी कर देंगे और फूलवती हमेशा के लिए यहीं आ जाएगी···लेकिन मां ने यह न सोचा कि छोटा-सा वाक्य कहकर उन्होंने उसे बहला तो दिया है, लेकिन इस वाक्य का सहारा लेकर उसने कामनाओं के कितने महल बनाए होंगे—और जब उसे पता चला था कि फूलवती की सगाई गांव के नौजवान किसान बीरू से निश्चित हो गई है-तो उसे आघात पहुंचा था···कामना और आकांक्षाओं के सारे महल क्षण-भर में धराशायी हो गए थे···आशा के सारे दीप एकाएक बुझ गए थे।

उसे प्रायः बचपन का वह समय याद आता जब वह और फूलवती एक ही थाली में खाते थे···एक साथ खेला करते थे और एक ही बिस्तर में सोते थे···उसे वह दृश्य भी याद था जब फूलवती पहली बार उसके सामने शरमाई थी···उसकी लाज-भरी मुस्कराहट आज भी उसकी नजरों के सामने घूमती थी···और फिर उसका वह दृश्य अभी तक विनोद के कल्पनापट पर चित्रित था। जब गांव जाते समय विनोद से बिछुड़ने पर वह रोई थी···उसने जाते हुए भीगी पलकें उठाकर निराशा से कैसे उसे देखा था···उन मासूम नजरों ने एक कसक-सी उसके मन में भर दी थी जिसे वह अब भी अनुभव कर सकता था।

समय के साथ फूलवती की यादें धुंधली पड़ गई थीं···धुंधली इसलिए कि उसका दिमाग उलझनों में फंस कर रह गया था···वह अपने पिताजी और मां के व्यवहार से भविष्य के लिए परेशान रहता था···जो दिन उसके हंसने-खेलने और मनोरंजन के थे उन दिनों में उसके मस्तिष्क में सोचें समा गई थीं···वह जैसा जीवन को बनाना चाहता था वैसा वह बन नहीं पा रहा था इसलिए कि घरेलू मामलों में उसकी कोई राय नहीं थी··· कोई उसकी सुनता नही था।

आज बुआ का पत्र पढ़कर उसे फिर फूलवती की याद आ गई···उसकी कल्पना में बारह-तेरह वर्ष की वह सुन्दर लड़की नाच रही थी जिसके चेहरे पर बाल्यपन और उठती हुई जवानी के मिश्रित भाव थे···लड़कपन के अल्हड़पन [illegible] नवावस्था की लाज का मिलन-सा···[illegible] खाने को भूलकर फूलवती की क[illegible] गया उसके एक हाथ में बुआ का [illegible] था और दूसरे हाथ में रोटी का ग्रास···और उसकी खोई नजरें सामने लगे हुए कैलेंडर पर जमी रह गई थीं।

'अरे वाह···' अचानक कामिनी की आवाज पर वह चौंक पड़ा···वह उसके पास खड़ी कह रही थी, 'क्या कैलेंडर से कोई भेद की बात हो रही है···? अगर खाया नहीं जाता तो मत खाओ···कोई जबरदस्ती तो है नहीं।'

'तुझे किसने बुलाया था यहां?' विनोद जलकर बोला।

उसे कामिनी का आना अप्रिय लगा था क्योंकि उसकी मधुर कल्पनायें बिखरकर रह गई थीं···और वह इन कल्पनाओं में अभी खोया रहना चाहता था।

'चलो-चलो···नहीं खाया जाता तो उठो···मैं बरतन समेटूं···' और फिर विनोद के हाथ में बुआ का खुला पत्र देखकर वह चौंकी, 'ओ हो···तो बुआ के पत्र की पूजा हो रही है।'

'चुड़ैल—।' विनोद ने पत्र ही कामिनी के खींच मारा, 'उठा यह खाना और दफा हो जा यहां से।'

'हां-हां अब काहे को भूख लगेगी.' कामिनी ने पत्र उठाते हुए कहा, 'नीचे चहेते यार जो बुला रहे हैं।'

विनोद पानी पीकर उठ गया···नीचे से सुरेन्द्र ने उसे पुकारा था···उसने नीचे झांक कर देखा···सुरेन्द्र और राजेश, उसको ओर देख रहे थे···विनोद 'आता हूं' कहकर नीचे चला गया और फिर दोस्तों के साथ हंसता-खेलता कुछ समय के लिए सब कुछ भूल गया।

शेष पृष्ठ ३९ पर

सिलबिल पिलपिल

इंकलाब जिंदाबाद

तो यो बात सै चूहे ! इस दुनिया में अपने हक के लिये लड़ना पड़ता है, वर्ना कोई नहीं पूछता । संघर्ष ।

ठीक सै चौधरी ! जभी हम देखते हैं कि गली में किस तरह कुत्ते हड्डी के लिये लड़ते हैं ।

हमें उठ खड़ा होना है । अपने अधिकारों की लड़ाई लड़नी है । हक मांगते हैं हम अपने पसीने का । पसीने की कीमत दो ।

पसीना कम से कम मदर डेरी के दूध के भाव तो पड़ना ही चाहिये ।

आज तक पिलपिल ने ए-वन जासूस कम्पनी का मैनेजिंग डायरेक्टर बन कर हमारा खून चूसा है । म्हारा शोषण किया है । पिलपिल कूलर की ठंडी हवा में दफ्तर में बैठा आइसक्रीम और मूंगफली खाता रहता है और कुर्सी पर ही सोकर नाक का बैंड बाजा बजाता है ।

यहां तक हद हो गयी है कि पिलपिल की मूँछों में रहने वाली जुयें अपनी शादी में इसी मुफ्त के बैंड बाजे से काम चला लेती हैं ।

बाहर का काम हम दोनों करते हैं । अपनी टांगें तुड़वाते हैं । सिर फड़वाते हैं, जबड़ों का एलाइनमैंट बिगाड़ देते हैं । नाक पर घूंसे सहते हैं । चांटे खाते हैं । हड्डी पसली तुड़वाते हैं । गर्ज यह कि अपनी नानी की फोटो २४ घंटे आंखों के फ्रेम में सजाये रहते हैं ।

उसका हमें क्या मिलता है ? कोई फील्ड एलाऊंस नहीं, कोई खर्चे की रकम नहीं । मुफ्त मां खटे जाओ, खटे जाओ ।

अब यह धांधलेबाजी नहीं चलेगी । हमने बगावत का झण्डा खड़ा करने की ठान ली है । अब तुम देखोगे कि एक मजदूर किस तरह अपने अधिकारों के लिये भयंकर लड़ाई लड़ता है । गरीब चन्द और हम दोनों हड़ताल करेंगे, हम दफ्तर नहीं जायेंगे । जरूरत पड़ी तो भूख हड़ताल भी करेंगे ।

थम दोनों कैसे बैठे हो ? दस बजने वाले हैं और दफ्तर जाने की कोई तैयारी नहीं है ?

दस क्या, सौ भी बजें तो बजने दो । आज हम घर पर ही बैठेंगे । टी. वी. देखेंगे । विविध भारती का प्रोग्राम सुनेंगे । ताश खेलेंगे । टिकट मिल गयी तो पिक्चर देखने जायेंगे । भाई जी थम चले जाओ । हम दोनों नहीं आयेंगे ।

तुम्हारा मतलब क्या है ? क्यों नहीं जाना है दफ्तर ? यह ए-वन जासूस कम्पनी है कोई खाला जी का भांडा है, सेठ हीरालाल का चोरी वाला केस सुलझाना है।

मतलब यह है कि हम दोनों आज से हड़ताल पर हैं। हम दोनों बाहर का सारा काम करते हैं, हमको उसका क्या मिलता है ? यात्रा भत्ता भी नहीं मिलता। बाहर का खर्चा भी नहीं मिलता। थम दफ्तर में बैठे मक्खियों की जाति समाप्त करने पर तुले हो। कभी बाहर जाओ तो पता लगेगा। मई महीने की धूप जब थारी गंजी चिकनी खोपड़ी पर पड़ेगी तो हॉफ बायल्ड अण्डा बन जायेगा। हमने फैसला किया है कि जब तक हमारी मांगें पूरी नहीं होतीं हम दफ्तर नहीं जायेंगे।

हड़ताल क्यों ?

हड़ताल के लिये पन्द्रह दिन का नोटिस देना पड़ता है। पता है ?
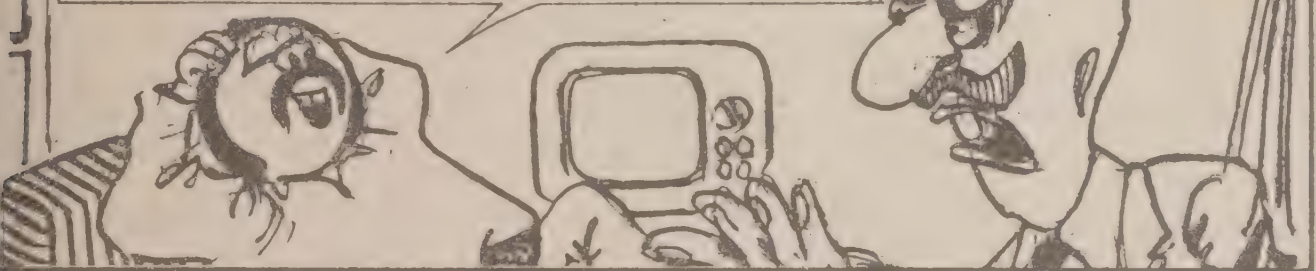
इन दोनों ने अपने आपको समझ क्या रखा है। मैं भी पिलपिल हूं, इनको कुछ ही दिनों में स्कूल का मास्टर बना दूंगा। रही दफ्तर की बात इनको अकेले मैं जासूस कम्पनी चला कर दिखा दूंगा। कुछ ही दिनों की बात है तब तक रूबी भी छुट्टी से वापिस आ जायेगी।
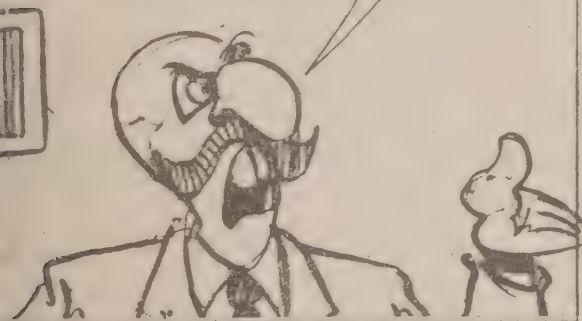
चला गया मुंह लटका कर पूंजीपतियों का पिट्ठू, अमरीका का दलाल। मजदूरों का दुश्मन।

दो दिन हम नहीं होंगे तो अक्ल ठिकाने आ जायेगी। बस अब जरा हमको हड़ताल का और मजदूरों की लड़ाई का वातावरण तैयार करना चाहिये। ताकि दूर-दूर तक हड़ताल की खबर फैले। रेडियो और टी. वी. पर हमारे समाचार आयें।
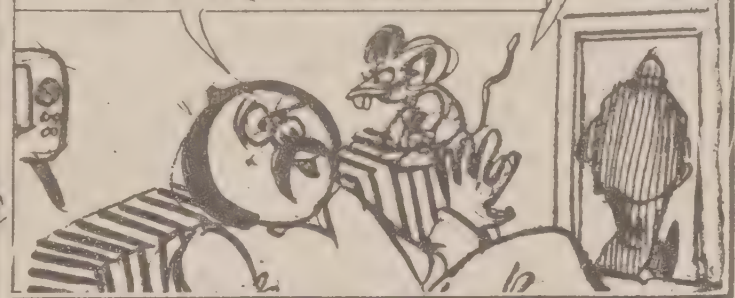
गाड़ी मजा आयेगा जब रेडुआ पर खबर आयेगी—'ए-वन जासूस कम्पनी के दोनों जासूसों के हड़ताल पर चले जाने से देश में भयंकर स्थिति पैदा हो गयी है। भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने गहरी चिन्ता व्यक्त की है। हड़ताल का समाचार पाते ही प्रधान मंत्री मोरार जी देसाई अपनी अमरीका यात्रा बीच में ही समाप्त कर स्वदेश लौट रहे हैं। आज शाम केन्द्रीय मंत्रियों की आपात बैठक बुलाई गयी है। श्री जयप्रकाश नारायण, विनोबा भावे और आचार्य कृपलानी ने सरकार से अनुरोध किया है कि वह तुरन्त हस्तक्षेप करे।

और स्थिति को बिगड़ने से बचा ले। श्री जार्ज फर्नांडीस और मधु दंडवते ने जासूस कम्पनी के चेयरमैन पिलपिल के रवैये को कड़े शब्दों में आलोचना की है। हड़ताल के समर्थन में देश के सारे बड़े नगर अनिश्चित काल तक बन्द रहेंगे। आज कुछ प्रदर्शनकारियों ने दिल्ली परिवहन की दो सौ बसों को आग लगा दी।

बचाओ ! बचाओ !! दिन दहाड़े मेरे घर में चोर घुस आये हैं और घर लूट रहे हैं। अच्छा हुआ आप लोग घर पर ही मिल गये। मेहरबानी करके जल्दी कीजिये कहीं वह भाग न जाये।

ग्रफसोस है मिसेज शर्मा हम ग्राज ग्रापकी मदद नहीं कर पायेंगे, हम ग्रपने ग्रधिकारों की लड़ाई लड़ रहे हैं।

हमारी मांग पूरी करो

ग्राज हम दोनों ही हड़ताल पर हैं। इसलिये चोरों को पकड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता।
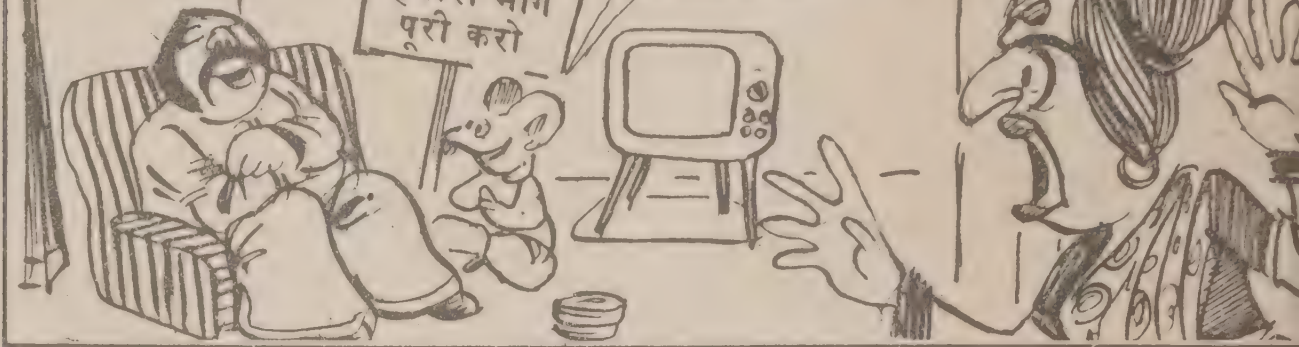
बड़ा मुश्किल होता है चूहे हड़ताल की रीत निभाना। यह तलवार की धार पर चलने जैसा है। कोई कितना भी उकसाये हम कोई ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे हमारी हड़ताल पर ग्रांच ग्राये।

हमारी हड़ताल गंगाजल की तरह पवित्र है ग्रौर पवित्र ही रहेगी। पूंजीपतियों का ऐसे ही तो नाश होगा।

कई ग्रादमी लोग दौड़े हमारे कमरे की तरफ मां ही ग्रा रहे हैं।

मिनिस्टर लोग होंगे। हमसे हड़ताल समाप्त करने की ग्रपील करने ग्रा रहे होंगे।

नहीं नहीं यह मिनिस्टर नहीं हैं। इनकी खुरदरी ग्रावाजों से ये उचक्के लगते हैं। वही चोर होंगे मिसेज शर्मा वाले, ग्रब हमारे घर ग्रा रहे हैं।

ऐ मोटे ! चुपचाप बैठे रहो। शोर करने की कोशिश की तो यह खंजर सीने के पार होगा। हमसे चालाकी न करना तुम्हें पता है मैं कौन हूं ? मैं डाकू भगन्दर सिंह हूं जो कुछ माल है निकालो

डाकू भगन्दर सिंह जी ग्राप खंजर दिखाने का मुझे कष्ट न करें। ग्रापको मैं यह बता दूं कि ग्राज हम दोनों हड़ताल पर हैं। इसलिये ग्रापके काम में हम कतई दखल नहीं देंगे। जो ले जाना है ले जाग्रो हम ग्रपने हड़ताल की मर्यादा नहीं तोड़ेंगे। यह लड़ाई पूंजीपतियों ग्रौर मजदूरों की है। दुनिया की कोई शक्ति हमें काम करने पर मजबूर नहीं कर सकती।
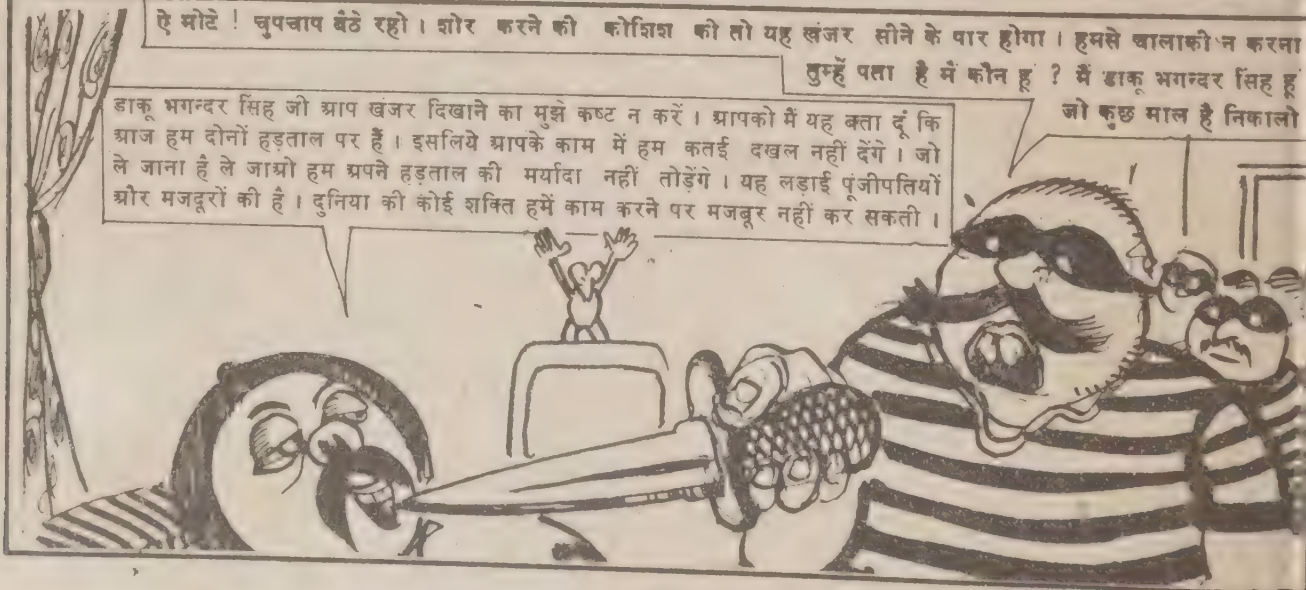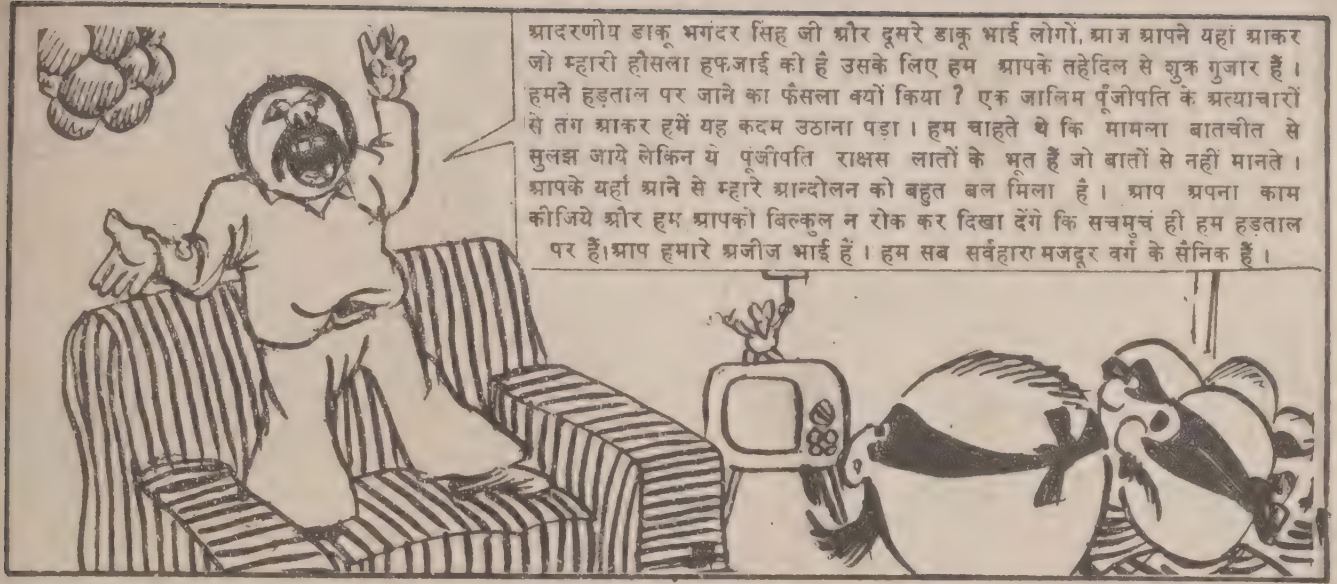
आदरणीय डाकू भगंदर सिंह जी और दूसरे डाकू भाई लोगों, आज आपने यहां आकर जो म्हारी हौसला हफजाई की है उसके लिए हम आपके तहेदिल से शुक्र गुजार हैं। हमने हड़ताल पर जाने का फैसला क्यों किया ? एक जालिम पूंजीपति के अत्याचारों से तंग आकर हमें यह कदम उठाना पड़ा। हम चाहते थे कि मामला बातचीत से सुलझ जाये लेकिन ये पूंजीपति राक्षस लातों के भूत हैं जो बातों से नहीं मानते। आपके यहाँ आने से म्हारे आन्दोलन को बहुत बल मिला है। आप अपना काम कीजिये और हम आपको बिल्कुल न रोक कर दिखा देंगे कि सचमुच ही हम हड़ताल पर हैं। आप हमारे अजीज भाई हैं। हम सब सर्वहारा मजदूर वर्ग के सैनिक हैं।

सरदार यह क्या चक्कर है ? मुझे तो यह आदमी पागल लगता है।

कुछ भी हो हमें क्या लेना है। तुम अपना काम करो। सारा सामान समेटो। कुछ भी न छोड़ना, ऐसे बेवकूफ रोज-रोज थोड़े ही मिलते हैं।
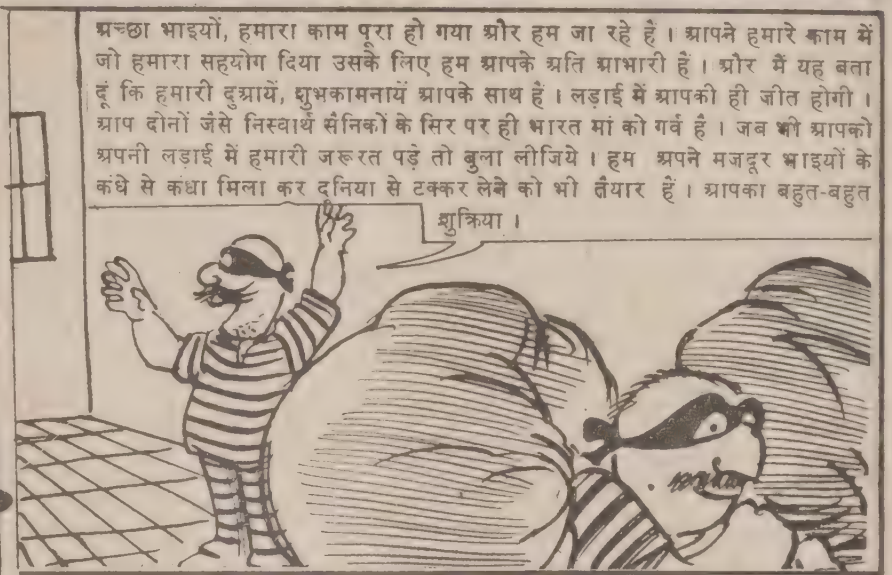
अच्छा भाइयों, हमारा काम पूरा हो गया और हम जा रहे हैं। आपने हमारे काम में जो हमारा सहयोग दिया उसके लिए हम आपके अति आभारी हैं। और मैं यह बता दूं कि हमारी दुआयें, शुभकामनायें आपके साथ हैं। लड़ाई में आपकी ही जीत होगी। आप दोनों जैसे निस्वार्थ सैनिकों के सिर पर ही भारत मां को गर्व है। जब भी आपको अपनी लड़ाई में हमारी जरूरत पड़े तो बुला लीजिये। हम अपने मजदूर भाइयों के कंधे से कंधा मिला कर दुनिया से टक्कर लेने को भी तैयार हैं। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।
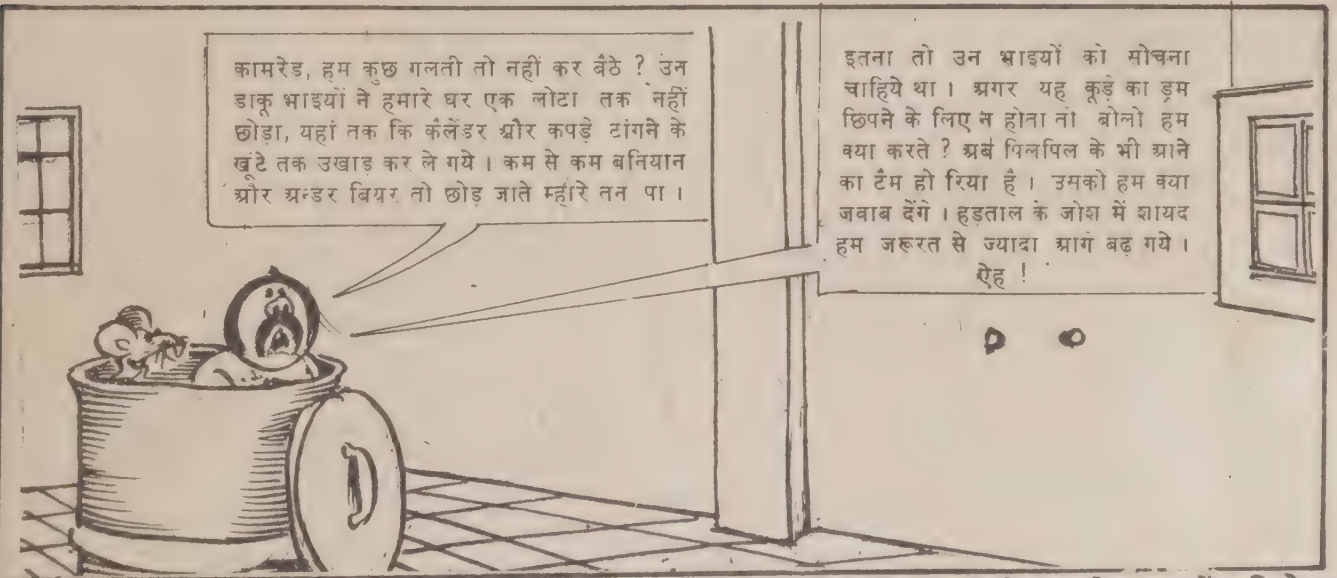
कामरेड, हम कुछ गलती तो नहीं कर बैठे ? उन डाकू भाइयों ने हमारे घर एक लोटा तक नहीं छोड़ा, यहां तक कि कलेंडर और कपड़े टांगने के खूंटे तक उखाड़ कर ले गये। कम से कम बनियान और अन्डर बियर तो छोड़ जाते म्हारे तन पा।

इतना तो उन भाइयों को सोचना चाहिये था। अगर यह कूड़े का ड्रम छिपने के लिए न होता तो बोलो हम क्या करते ? अब पिलपिल के भी आने का टैम हो रिया है। उसको हम क्या जवाब देंगे। हड़ताल के जोश में शायद हम जरूरत से ज्यादा आगे बढ़ गये। ऐह !

पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

मोटू पतलू

पिछले दिनों घसीटाराम एक आदमी का अटैची केस लेकर भाग गया था। जिसके अंदर किसी आदमी की लाश थी। बक्स एक गटर में गिर गया था और उसका राज पुलिस को बताने की धमकी देकर बच्चे उठाने वाले एक गैंग ने घसीटाराम को अपने साथ मिला लिया था—गैंग ने सेठ बलराम से उनका बच्चा लौटाने के बदले में पचास हजार रुपये मांगे थे। और यह काम घसीटाराम के हवाले किया गया था कि वह निर्धारित समय पर पुराने किले के पास लाल कुएं पर जाये और सेठ बलराम से रुपया वसूल करे। रास्ते में घसीटाराम को मोटू-पतलू मिल गये थे, जो मदारियों का भेष भरे गैंग को खोजने और पकड़ने के चक्कर में घूम रहे थे। घसीटाराम ने पचास हजार रुपया पाने के नशे में बच्चा मोटू-पतलू को थमा दिया और पुराने किले की ओर बढ़ गया—सेठ बलराम जी पचास हजार रुपया लेकर पुराने किले के उसी रास्ते पर पहुंचे तो उन्होंने पतलू की गोद में अपने बच्चे को पहचान लिया। सेठ जी ने मोटू पतलू को गैंग का आदमी समझा और उन्हें पचास हजार रुपया थमाकर अपना बच्चा उनसे छीन लिया और वापस भाग लिये—वहां पुलिस भी खुफिया तौर पर अपनी कार्यवाही कर रही थी। सेठ जी से पूछने पर उन्होंने बताया बच्चा उठाने वाले दो मदारी पास ही सड़क के मोड़ पर खड़े हैं। पुलिस ने वहां पहुंचकर मोटू-पतलू को पचास हजार रुपये समेत बच्चा उठाने के अपराध में पकड़ लिया। उधर घसीटाराम लाल कुएं की मुंडेर पर बैठा पचास हजार रुपये के लिए धूप में सूख रहा था—तंग आकर वह खाली हाथ लौट आया तो बच्चा हाथ से गंवाने और रुपया न पाने के अपराध में गैंग वालों ने घसीटाराम को उल्टा लटका दिया। इसके बाद पुलिस मोटू पतलू को लेकर पुलिस स्टेशन पहुंचे है। इंस्पैक्टर कुमार को लंदन फोन करने पर उनकी शनाख्त हो गई है कि वे मोटू-पतलू हैं और गैंग को पकड़ने के लिए मदारियों का भेष भरे पुलिस की सहायता कर रहे हैं। इस के बाद के हंगामे आगे देखिये।

असल बात यह निकली कि घसीटा राम बच्चे उठाने वाले गैंग से जा मिला है। उसका पता कैसे मालूम हो कि वह कहां है और कैसे पकड़ में आ सकता है।

घसीटाराम के पास एक अटैचीकेस था, जिसमें वह कहता था कि गोबर है। पर हमारे विचार में उसने अटैचीकेस में कुछ और ही छुपा रखा था। एक रोज हम उसका राज पता लगाने के लिए इंस्पैक्टर कुमार के साथ घसीटाराम के घर पहुंचे थे तो वह हमें अपने घर पर ही छोड़कर और अटैचीकेस लेकर न जाने कहां भाग गया था। तब से उस का कुछ पता नहीं है।

जब उसने बच्चा हमें थमाया, तो वह कह रहा था कि किसी करोड़पति सेठ ने उसे गोद ले लिया है।

पर मैं सोचता हूं, ऐसी फूटी किस्मत वाला कौन होगा, जो उस बे-पेंदे के लोटे को गोद लेगा।

इसमें भी गैंग वालों की कोई चाल होगी। असल बात यह है कि घसीटाराम बच्चे के बदले में रुपया लेने आया था। गलती से वह बच्चा तुम्हें थमा गया। सेठजी ने तुम्हें गैंग का आदमी समझा। अब सवाल यह है कि गैंग पकड़ा कैसे जाए?

मेरा एक आईडिया है इंस्पैक्टर साहब।

कहो!

चोर अपनी जीत भले ही भूल जाये पर हार कभी नहीं भूलता। इस केस में बच्चा उठाने वाले बुरी तरह हारे हैं। इस हार को वे कभी नहीं भूलेंगे। वे यह अवश्य जानना चाहेंगे कि बच्चा अब कहां है? क्या पुलिस स्टेशन पहुंचकर उसके माता-पिता को लौटा दिया गया है। अगर उन्हें पता लगा कि बच्चा लौटा दिया गया है, तो वे चौकन्ने हो जायेंगे। और उन्हें पकड़ने का काम और मुश्किल हो जाएगा।

ठीक है। गुड आईडिया। वंडरफुल आईडिया।

मतलब है वह बच्चा कुछ दिनों के लिए हमें दे दीजिये। बच्चा हमारे पास होगा तो गैंग वाले मरते दम तक हमारा पीछा नहीं छोड़ेंगे। वे सर के बल चलकर हमारे घर आयेंगे। और पकड़े जायेंगे।

सेठ जी से कहकर हम बच्चा अभी तुम्हारे हवाले करते हैं। तुम्हारे घर के आस-पास भेष बदले हुए पुलिस तैनात कर दी जाएगी और चूहेदान में चूहे आते ही पकड़ लिए जायेंगे।
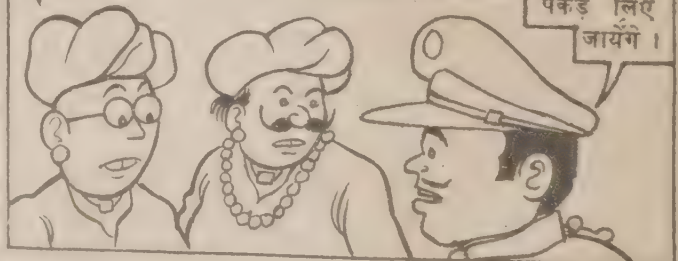
उधर गैंग के कर्ता-धर्ता घसीटाराम की खाल में भुस भर रहे थे और अपने ही जोड़ तोड़ में लगे हुए थे।

बेड़ा गर्क हो इसका।

तुम कहते थे यह बड़ा विश्वास का आदमी है। इससे बड़ा बेवकूफ नही मिला तुम्हें अपने गैंग में मिलाने के लिए। यह इसी प्रकार लोगों के बच्चे लौटाने लगा तो एक रोज हमारे हाथ में कटोरा देकर हमें भिखारी बना देगा।

मुझे पहले पता होता कि तुमने बच्चे अपहरण करने वाला गैंग बना रखा है तो मैं तुम्हारा साथ कभी नही देता। मैं एक शरीफ आदमी हूं।

शराफत की बात छोडो। हम सिरे से यह मानने के लिए तैयार नहीं कि तुम आदमी हो
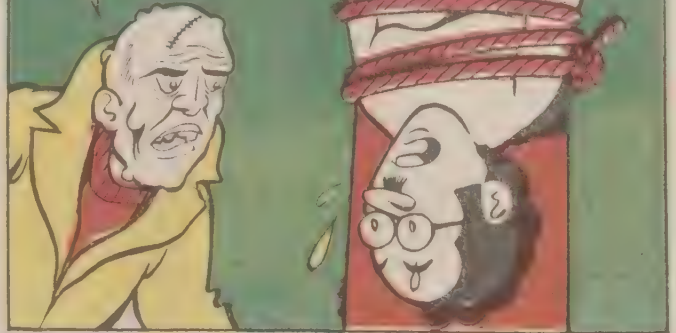
एक बच्चा तो हाथ से मुफ्त में निकल गया। अब तुम अपने किसी सगे सम्बन्धी का पता बताओ, जिसे हम पत्र लिखें कि अगर वह तुम्हें जीवित पाना चाहता है तो हमें पचास हजार रुपया दे और तुम्हें हमसे ले लें।

कोई पचास हजार अंडों के छिलके भी नही देगा मुझे जीवित पाने के लिए।

अच्छा तो यह बताओ, यह मोटू-पतलू कौन हैं? जिन्हें तुमने अपने बाबा का माल समझ कर वह बच्चा दे दिया है। वे देंगे तुम्हारे नाम पर रुपया?

मेरे नाम पर जहर की पुड़िया मांगो तो दे देंगे।

वे तुम्हारे जानकार हैं?

इतने जानकार हैं, कि जानलेवा बन [illegible]

उनके पास बहुत सारा रुपया है?
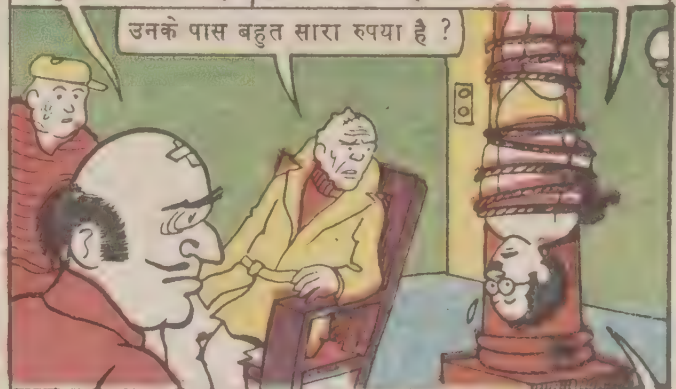
इतना रुपया है उन कंगलों के पास कि कुछ मत पूछो। भगवान ने संसार में सभी को छप्पड़ फाड़कर रुपया दिया है। एक मैं ही फटीचर रह गया हूं, भगवान को [illegible] का तजुर्बा नहीं है आदमी पहचानने का।

मोटू-पतलू कहाँ रहते हैं ?

दीवाना आफिस के पिछवाड़े ।

अब मुसीबत यह है कि जिन मोटू-पतलू को इस करेले ने बच्चा थमाया है वे इसके जानकार हैं । बात पुलिस तक पहुंची होगी । यह हमारे बंगले से बाहर निकलेगा तो इस की पहचान हो जाएगी । यह पकड़ा जाएगा और हमें भी पकड़वा देगा ।

इस मुसीबत से छुटकारा पाने की यही एक तरकीब है कि इसकी गर्दन काट कर छुट्टी कर दो ।

गर्दन तो कभी भी काट कर इसकी छुट्टी कर देंगे । पहले इसके बदले में रुपया ऐंठने की कोशिश तो करो ।

साथ ही पहले यह पता लगाने की कोशिश करो कि बच्चा मोटू-पतलू के पास ही है या उन्होंने पुलिस स्टेशन पहुंचा दिया है । पुलिस स्टेशन पहुंचा दिया है, तो समझो हमारे लिए खतरा बढ़ गया है । उन्हीं के पास है तो उन बेवकूफों को चक्कर में लाना कोई मुश्किल नहीं ।

तुम दोनों भैस बदलकर मोटू-पतलू के घर जाओ और हकीकत का पता लगाओ ।

यह फैसला होते ही गेंग के दो आदमी फेरी वालों का भेष बदलकर मोटू-पतलू के घर की ओर चल दिये ।

रंग रंगीले लो गुब्बारे,
बनो दीवाने खुशी के मारे ।
बच्चों का तुम दिल बहलाओ,
बाल वर्ष के गाने गाओ ।

पहले तो कभी कोई गुब्बारे वाला यहाँ नहीं आया ।

इन्सपेक्टर साहब ने कहा था ना, पुलिस के आदमी भेष बदलकर यहाँ घूमेंगे । उनमें से ही कोई होगा ।
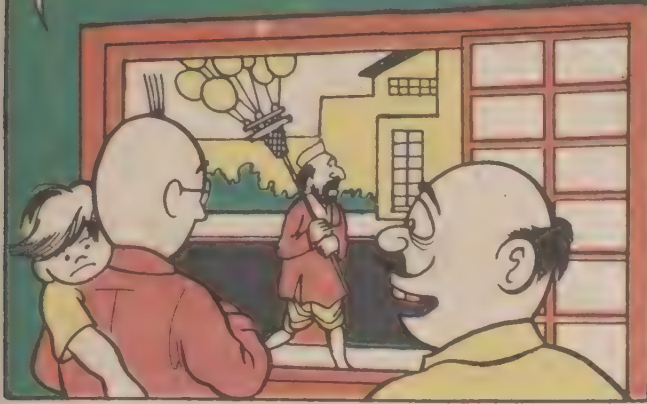
ऐ गुब्बारे वाले । एक गुब्बारा दो हमारे चिन्टू को ।

निकालो पचास पैसे,

बच्चा इनके पास ही है । बात पुलिस तक नहीं पहुंची यानी हमें कोई खतरा नहीं है ।

एक गुब्बारे के पचास पैसे मांग रहे हो । बच्चा तुमने हमें दिया है और हम ही से पैसे मांग रहे हो ।

बच्चा हमने इन्हें दिया है ? इन्हें इस बात का अहसास है ।

बड़ा प्यारा बच्चा है ।

क्या खाक प्यारा बच्चा है ? दिन रात खाने के लिए मुंह फाड़े रहता है । पर बात कोई बन नहीं रही है । अब तक एक भी चूहा पिंजरे में नहीं आया है ।

चूहा पिंजरे में नहीं आया ? यह बच्चा चूहे खाता है क्या ?
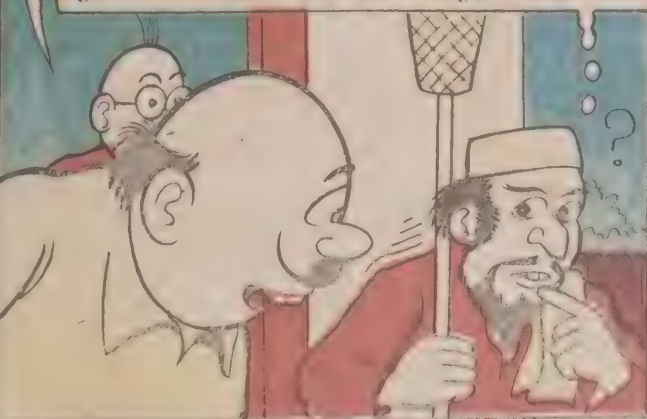
फंसेगा कोई न कोई,तुम ऐसे ही भेष बदले यहाँ गश्त लगाते रहो ।

भेष बदले गश्त लगाता रहूं, क्या इन्होंने पहचान लिया मुझे ?

बच्चों के नये खिलौने, मनमोहन और सलौने ।
सस्ते दामों में लूटो, अपने बच्चे को मत कूटो ।

लो एक और पुलिस वाला आ गया भेष बदलकर ।

मोटर दूं ? हवाई जहाज दूं ? रेल का इंजन दूं ? सीटी दूं ?

हां सीटी दे दो ।

कोई फंसा तो सीटी बजाकर तुम्हें बुला लेंगे ।

कोई फंसेगा तो...?

हां हां । जरूर फंसेगा । तुमने भेष अच्छा भरा है ।
यहीं रहना, कहीं जाना मत ।
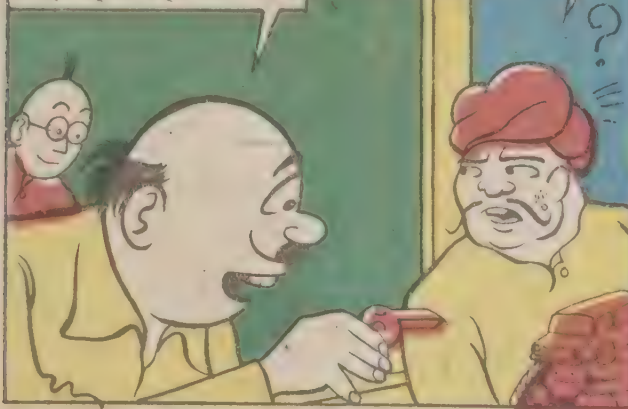
तभी वहां एक आइसक्रीम वाला आ गया ।

देख रहा है पतलू । वह आइसक्रीम वाला बच्चे की ओर कैसे घूर-घूरकर देख रहा है ।

लगता है बच्चे उठाने वाले गैंग का आदमी है ।
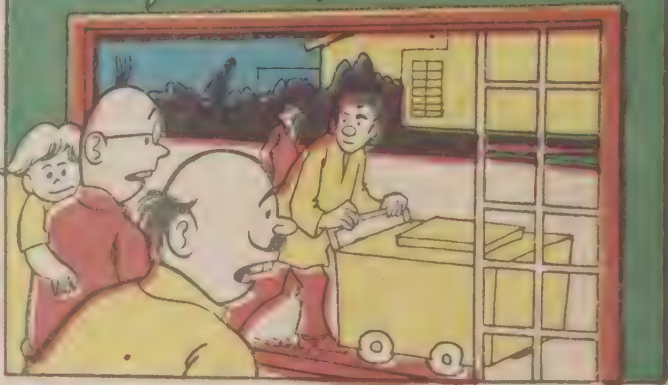
तू सीटी बजा । मैं झपटकर इसे काबू में करता हूं ।

तुर...र...र...र...!

पकड़ो-पकड़ो लोगों । यह बचकर भागने न पाये ।

तुर...र...र...

शोर सुनकर वहाँ भीड़ जमा हो गई थी ग्रौर लोगों ने ग्राइसक्रीम वाले को घेर लिया था।

ए गुब्बारे वाले, खिलौने वाले सीटी नहीं सुनाई दे रही है तुम्हें ! भागकर ग्राग्रो ग्रौर इसे पकड़ो।
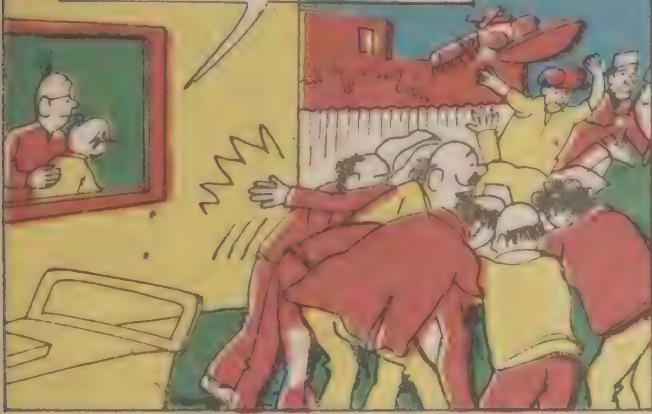
यह हंगामा देखकर भेष बदले हुए गेंग के ग्रादमी भाग खड़े हुए।

किसे पकड़ लिया है ? चक्कर क्या है ! भागो यहाँ से।

उन्होंने हमें पहचान भी लिया ग्रौर पकड़ा पता नहीं किसे है। यह माजरा क्या है ?

भीड़ ने ग्राइसक्रीम वाले के कपड़े फाड़ डाले थे। जब भीड़ छटी तो पता लगा जिसे मोटू पतलू गेंग का ग्रादमी समझ रहे थे वह ग्राइसक्रीम वाले का भेष भरे हुए पुलिस का ग्रादमी था।

यह क्या गलती हो गई हमसे ! वे गुब्बारे ग्रौर खिलौने वाले कहाँ गये, जिन्हें हम पुलिस का ग्रादमी समझ रहे थे।

ग्रपने ग्रड्डे पर पहुंच गये होंगे। जैसी पहचान तुमने मेरी की है, वैसी ही उनकी भी की होगी।

ग्रपने ग्रड्डे पर पहुंचकर गेंग के ग्रादमी ग्रब ग्रगला प्रोग्राम बना रहे थे।

बच्चा मोटू-पतलू के पास ही है, इसका मतलब है बात पुलिस तक नहीं पहुंची। पर वहां पकड़-धकड़ क्या हो रही थी।

ग्रौर वे यह भी कह रहे थे कि उन्होंने पहचान लिया है कि हम भेष भरे हुए हैं।

पहचान लिया होता तो किसी ग्रौर ग्रादमी की बजाए वे हमें ही न पकड़ते।

कुछ भी हो मैं योजना के ग्रनुसार कल उनके घर जाऊंगा ग्रौर पत्थर में बांधकर ग्रपना पत्र उन तक पहुंचा दूंगा।

अगले रोज मोटू-पतलू अपनी बैठक में बैठे हुए थे कि एक पत्थर में बंधा हुआ पत्र खिड़की तोड़ता हुआ अन्दर आया।

क्या मुसीबत आई। पत्थर के साथ एक पत्र बंधा है।
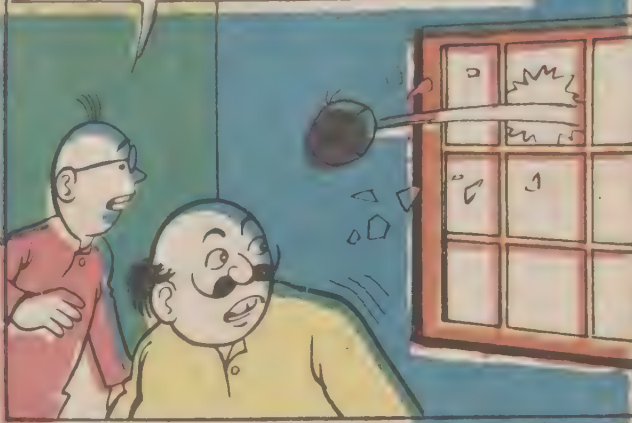
लिखा है घसीटाराम को हमसे जीवित लाना चाहते हो तो पचास हजार रुपया लेकर यमुना के नये पुल पर पहले बिजली के खम्बे के नीचे आज शाम को पांच बजे आ जाओ। पुलिस को खबर की या कोई और हेरा फेरी की तो घसीटाराम की हत्या कर दी जाएगी।
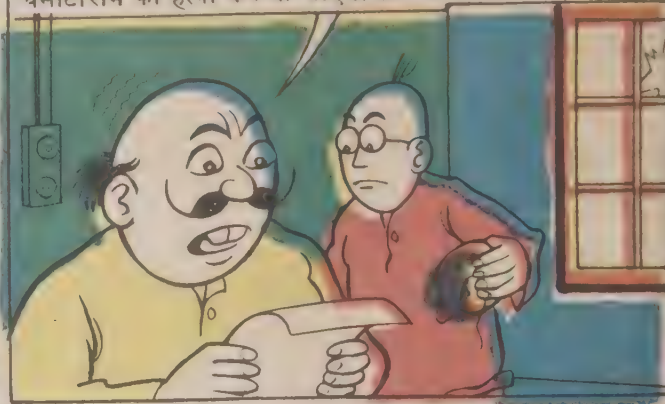
हत्या कर दी जाएगी। बाहर फेंको यह पत्थर।
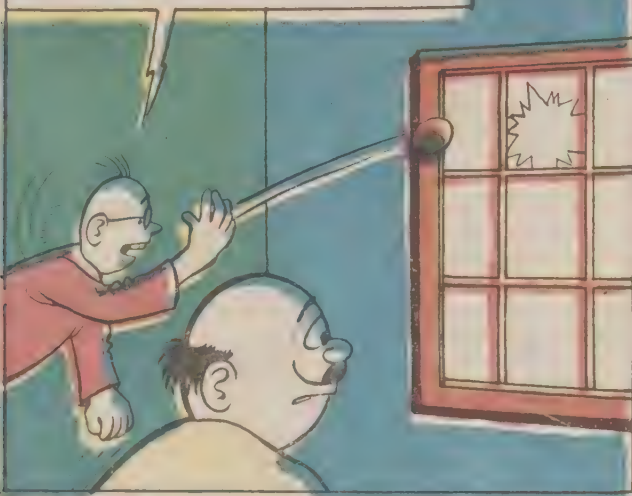
पत्र पहुंचा दिया है। अब यहाँ से खिसकना चाहिए।

पर उस पत्र का जवाब आया तो गैंग के आदमी के लिए वहाँ से खिसकना आसान नहीं था।

आह...

यह किसके चीखने की आवाज आई?

पता नहीं कोई बेचारा यहां बेहोश पड़ा है।
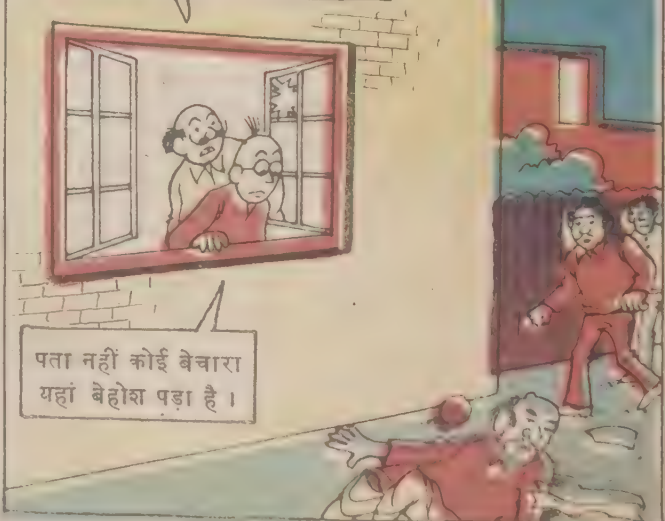
तभी वहां सफेद वर्दी पहने पुलिस वाले आ गये।

पता नहीं कौन मुसीबत का मारा है। बेचारे के मुंह पर पानी के छींटे मारें।

अपने सर पर जूते मार लो। पता है यह कौन है? इसकी नकली दाढ़ी उतार कर देखो।

नकली दाढ़ी उतारी गई तो बात ही कुछ और थी।

मेरे पास यह फोटो है बदनाम डाकू लहरी सिंह की। पहचानो इसे यह कौन है?

देखते ही देखते वह होश में आ गया। पर यह बेहोशी वाला होश था। पत्थर की चोट ने उसके सर को पिलपिला करके उसकी आंखें फेर दी थीं। उसमें झूठ बोलने और चालाकी करने की शक्ति नहीं रही थी।

कौन हो तुम?

मैं लहरी सिंह हूं।

क्या बच्चे अपहरण करने वाले गेंग से तुम्हारा सबंध है?

पूरा सम्बन्ध है। क्या तुम भी हमारे गेंग में शामिल होना चाहते हो?

बच्चे कहां हैं?

हमारे अड्डे पर। मैं वहीं जा रहा हूं। चलो मेरे साथ।

लहरी सिंह उठकर एक ओर चल दिया। सादा कपड़े पहने पुलिस उसके पीछे-पीछे थी।

लगता है सर पर चोट लगने से इसका दिमाग खराब हो गया है।

पर इतना खराब नहीं हुआ है कि सच्ची बात छुपा सके। इसके पीछे-पीछे चले चलो।
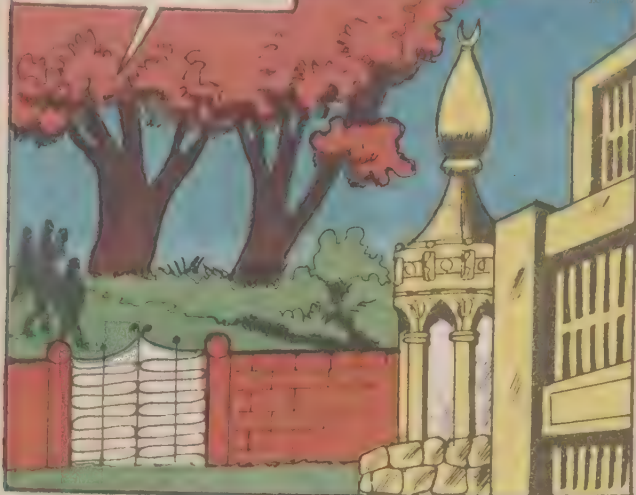
अड्डे पर पहुंचे तो गैंग के दूसरे साथी आदमियों की भीड़ को देखकर घबरा गये।

यह क्या तमाशा है? यह भीड़ कैसी है?

यह पूछ रहे थे, बच्चे कहाँ हैं। मैने कहा हमारे अड्डे पर। मेरे साथ आओ।

खबरदार, कोई भी अपनी जगह से हिला तो गोली से उड़ा देंगे।

देखो मैं हिल नहीं रहा हूं!

मुझे तो गोली से नहीं उड़ाओगे।

यही है घसीटाराम

तुम्हारी खाल की पतंग बनाकर उड़ायेंगे। गैंग तो पकड़ा गया, पर तुम से बहुत लम्बा हिसाब करना है।

नये हंगामों के लिये आगामी अंक की प्रतीक्षा कीजिये।

खेल खेल में
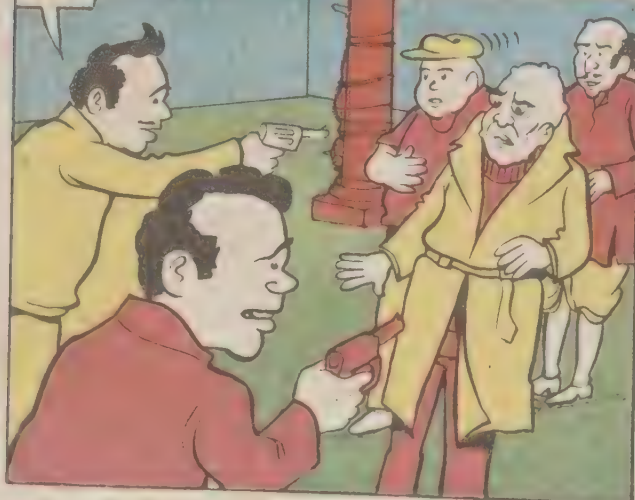
पैकर सर्कस के पिता

कैरी पैकर

कैरी पैकर ने क्रिकेट जगत में अपना र्ल्डसीरीज शुरू करके परम्परागत टेस्ट ात को जो धक्का लगाया है वह सबको पता । लगभग तीन वर्ष से पैकर सर्कस और ट मैचों में रस्सा कस्सी चल रही है। र ने आस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज तथा पाकि-ान के चोटी के सारे खिलाड़ियों को अपने र्कस में भर्ती करके इन देशों ... भग भिखमंगा बना दिया। इस सारे ड़े की शुरूआत तब हुई जब १९७६ में स्ट्रेलिया के टी० वी० कुबेर कैरी पैकर ने स्ट्रेलिया बोर्ड के सामने प्रस्ताव रखा कि व वर्षों के लिये आस्ट्रेलिया में होने वाले ट मैचों के प्रसारण का पूरा अधिकार के टी० वी० चैनल को दिया जाये। वह के लिए काफी पैसा देने को तैयार थे। सरे टी० वी० चैनलों से कई गुना अधिक) न्तु आस्ट्रेलियाई क्रिकेट बोर्ड ने उनका ताव ठुकरा-दिया। पैकर बहुत जिद्दी व ले की भावना से भरा व्यक्ति है। उसने का बदला सारे टैस्ट क्रिकेट से लेने की ली और टेस्ट क्रिकेटों को कुचल देने के ये अपना पैकर वर्ल्ड सीरीज क्रिकेट चालू विश्व के चोटी के खिलाड़ियों को अनु-धत करके छीन लिया। अब इन पैकर ाशय का परिचय जानिये—

कैरी पैकर

कैरी पैकर के पिता फ्रैंक पैकर सनकी स्म के रईस आदमी थे, खुद हैवीवेट सर थे। व्यापारी थे, सट्टा लगाते थे र १९२० से १९३० के बीच उन्होंने अपने ाचार पत्रों की शृंखला भी चालू की। टेलीग्राम समाचार पत्र को उन्होंने धिक बिक्री वाला अखबार बना दिया। बार का इतना रौब था कि आस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री का अखबार के दफ्तर से सीधा टेलीफोन सम्पर्क था। १९५९ को फ्रैंक पैकर को सर की उपाधि मिली। उसी वर्ष उन्होंने अपना टेलीविजन चैनल शुरू किया। कंजूस स्वभाव के होने के बावजूद वे चैम्पियनों और खेलों का आदर व प्यार करते थे।
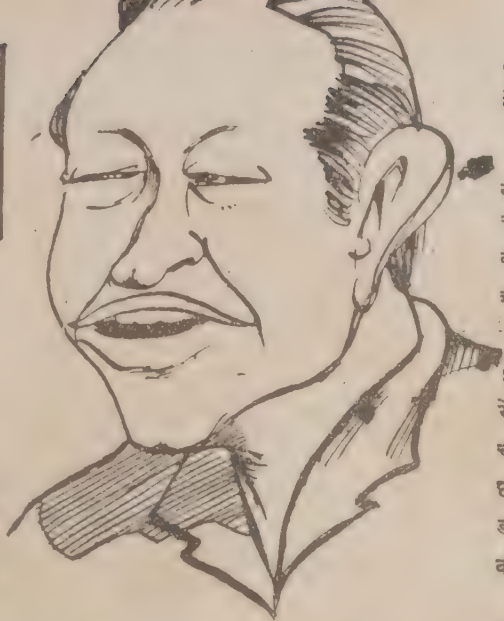
फ्रैंक पैकर के दो बेटे थे एक क्लाइड पैकर व दूसरा कैरी पैकर। दोनों की शिक्षा इंग्लैंड में हुयी। फ्रैंक पैकर अपने नियमों के इतने पक्के थे कि एक बार छुट्टियों में कैरी पैकर अपना रैकट इंग्लैंड में भूलकर आस्ट्रेलिया पहुंचा तो पिता ने वापसी जहाज से उसे वापस इंग्लैंड रैकट लाने लौटा दिया।

बाद में बेटों ने बाप का लम्बा चौड़ा फैलता जा रहा व्यवसाय सम्भाला। इस बीच आस्ट्रेलिया में पैकर के अखबार के सामने एक और अखबार खड़ा हो गया जो डेली टेलीग्राफ का प्रतिद्वन्द्वी बना। दोनों भाइयों ने इस अखबार के दफ्तर जाकर मारपीट की। क्लाइड की पसलियां चूर-चूर हो गयीं। कैरी की आंख सूज गयी। दोनों भाइयों को अखबार में रुचि नहीं थी। अतः फ्रैंक पै र को डेली टेलीग्राफ अपने प्रतिद्वन्द्वी के हा ...्र करोड़ डालर में बेचना पड़ा।
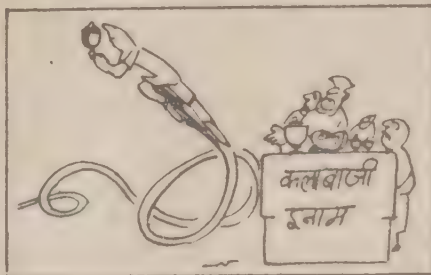
क... ड कई बातों में पिता से सहमत नहीं थ ...उनमें मतभेद इतने बढ़े कि क्लाइड चालीस लाख डालर में अपना हिस्सा कैरी पैकर को बेच अमरीका चला गया। अब भी वहीं रह रहा है।

कैरी पैकर पिता का भक्त था। १९७४ में फ्रैंक चल बसे। कैरी पैकर पत्रिका रेडियो तथा टी. वी. चैनल आदि के कई धंधे चला रहा है! स्वभाव से सामंतवादी है। छोटी सी गलती पर किसी की भी छुट्टी कर डालता है। कैरी पैकर की पत्रिका 'वीमेंस वीकली' की नौ लाख सरकुलेशन है।

कैरी पैकर में पिता के बहुत से संस्कार हैं। खेलों में कैरी पैकर बहुत रुचि लेते हैं। चैम्पियनों को निमन्त्रण देने को उतावले रहते हैं। आस्ट्रेलिया में गोल्फ को प्रोत्साहन कैरी पकर ने ही दिया है। वह प्रति वर्ष गोल्फ चैम्पियन शिप में दो लाख डालर पुरस्कार राशि देते हैं।

कैरी पैकर अपने बेटे को टोनी ग्रेग द्वारा क्रिकेट का प्रशिक्षण दिलवा रहे हैं।

जैसे-जैसे पैकर का वर्ल्ड सीरीज क्रिकेट लोक प्रिय होता जा रहा है विश्व टेस्ट क्रिकेट बोर्डों के हाथ पांव फूलते जा रहे हैं। वेस्ट इंडीज तथा पाकिस्तान ने तो कैरी पैकर के सामने हथियार डाल ही दिये हैं। एक बात से इन्कार नहीं किया जा सकता, वह यह कि पैकर के कारण विकेटरों की आर्थिक स्थिति का कायाकल्प हो गया है। जो खिलाड़ी पैकर सर्कस से बाहर हैं वह भी दिल ही दिल में पैकर के आभारी हैं। यह सर्कस का दबाव ही है कि आज भारत के टैस्ट खिलाड़ी को एक टैस्ट में खेलने के दस हजार रुपये से अधिक मिलते हैं। क्रिकेट बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार आज भारतीय टैस्ट खिलाड़ी औसतन, टैस्टों में बनाये प्रत्येक रन पर चार सौ से पांच सौ रुपये के बीच पाता है।

कैरी पैकर एक तो अपने पिता के प्रशंसक हैं केवल एक और व्यक्ति है जो कैरी की नजरों में महान है। जानते हैं वह कौन है? चंगेज खां। शायद कैरी पैकर चंगेज खां के नक्शे कदम पर चलते हुए टैस्ट क्रिकेट को तहस-नहस करने पर तुले हैं।

कलाबाजी
इनाम

भक्त और भगवान

राजेन्द्र चंचल रामपुरी

एक भक्त
काफी सशक्त
रहने लगा
ईश्वर की आराधना में व्यस्त
बस पूजा ही करता रहता
वह हर घड़ी होकर मस्त
इतनी कठोर
और घनघोर
देखकर तपस्या
प्रगट हुए भगवान
और लगे पूछने तपस्या
भक्त भगवान के सामने
शीश झुकाकर
कुछ गंभीर मुद्रा में आकर
धीरे से यों बोला
उसने मुंह खोला—
'हे ईश !
जगदीश !!
स्वामी !
अन्तर्यामी !!
मुझे कष्ट इस बात का है
किस्सा उस रात का है
एक कवि जब—
मेरे मुहल्ले का मर गया,
मोहल्ले वालों की आत्मा
शांत कर गया।
पर मेरे मालिक
यह चक्कर
मेरी समझ में कतई नहीं आता
कि आपने मात्र एक ही कवि को
आपने पास क्यों बुलाया ?
हे प्रभु !
यदि तू
पचास साठ कवियों को थोक में
अपने पास बुलाता
तो क्या बिगड़ता तेरा
मोहल्ला और भी प्रसन्न हो जाता !
तभी ईश्वर की वाणी आई—
'ऐ भाई !
तू किस लिए इतना
बुजदिल हो रहा है
अरे मूर्ख पचास साठ कवियों को
कैसे बुलाऊँ,
अभी तो एक से ही पीछा छुड़ाना
मुश्किल हो रहा !'

भारत के पक्षी एलबम सीरीज

गुलाबी सिर वाली बत्तख

हम इस कॉलम में प्रति सप्ताह भारत के एक पक्षी का सुन्दर चित्र सहित परिचय देंगे। आप इन्हें काट कर अपने व दोस्तों के मनोरंजन व ज्ञान के लिये एलबम बना सकते हैं।

गुलाबी सिर वाली बत्तख अब भारत मे लुप्त हो चुकी है। हम सबका दुर्भाग्य है कि अपने देश के इस पक्षी को कभी देख नहीं पायेंगे। गुलाबी सिर वाली बत्तख अन्तिम बार बिहार क्षेत्र में लगभग साठ-सत्तर वर्ष पूर्व देखी गयी थी। गुलाबी सिर वाली बत्तख आकार में दूसरी बत्तखों के समान ही थी। भारत के पश्चिमी क्षेत्र बिहार व आसाम क्षेत्र में बहुतायत से मिलती थी। अभी हाल में ही एक व्यक्ति ने दावा किया था कि उसने भारत-चीन सीमा के पास चीनी क्षेत्र में चार अथवा पांच सिर वाली बत्तखें देखी हैं। उस व्यक्ति ने वन्य सुरक्षा अधिकारियों को सूचना दी कि हर सर्दियों में वे वह[illegible] आती हैं। पूछताछ करने पर पता लगा कि वास्तव में उसने किसी और व्यक्ति से य[illegible] सुना है। परन्तु यह आश्वासन दिया गया कि यदि उसे विशेष उपकरण तथा कैमरा दिया जाये तो वह फोटो प्रस्तुत कर सकता है। परन्तु कैमरा उपकरण महंगे होने के कारण महज एक व्यक्ति के दावे पर खर्च मोल लेना ठीक नहीं समझा गया। निदान अब हालत यह है कि उस व्यक्ति का दावा कुछ लोग मानते हैं और अधिकतर गप्प समझते हैं। सच्चाई क्या है यह तो भविष्य में ही पता लगेगा।

शोले

कविवर बोले
जोश में आकर
भांग का अंटा चढ़ाकर—
हम तो
अपने काव्य में
शोले भड़काएंगे !
हमने कहा—
'चलो,
मिट्टी के तेल की लाइन से
बच जाएंगे !'
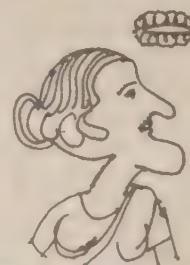
दहेज

एक विधुर वृद्ध ने
पसंद की
एक विधवा बुढ़िया
और—
दहेज लिया
'दांतों का सेट !'

क्यों और कैसे

प्र० : उत्तेजना अथवा डर की अवस्था में हमारे शरीर के रोंगटे क्यों खड़े हो जाते हैं ?

उ० : हमारे शरीर के अन्दर बहुत सी छुपी हुई ग्रन्थियां हैं। ये ग्रन्थियां शरीर के भीतर कई प्रकार के रासायनिक तत्त्व उत्पन्न करती हैं जो रक्त में मिल कर रक्त नाड़ियों द्वारा शरीर में फैल जाते हैं। इन तत्त्वों द्वारा शरीर के बहुत से कार्यों का नियन्त्रण किया जाता है। ऐसे ही ग्रन्थियों के समूह में से एक प्रकार की ग्रन्थी से उत्पन्न तत्त्व के कारण शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ये एडरीनल ग्रन्थियां शरीर में गुरदे के निकट स्थित हैं, इनसे उत्पन्न तत्त्व एडरेलीन का कार्य शरीर को विशेष शारीरिक कार्य के लिए तैयार करना होता है, जैसे सामान्य समय में शरीर को लड़ाई के लिए तैयार करना है। एडरेलीन तत्त्व शरीर पर दो प्रकार के प्रभाव डालता है। एक तो सारे शरीर के रोंगटे खड़े कर देता है तथा आंखों की पुतलियों को फैला देता है जिससे शक्ल डरावनी बन कर, शत्रु को भयभीत करने में सहायता देती है, अपितु इस अतर को केवल बाह्य सज्जा कहा जा सकता है, क्योंकि इससे अतिरिक्त एडरेनलीन शरीर की कार्य कुशलता भी बढ़ाती है ये। हृदय की मांस-पेशियों को तेज काम करवाती है जिससे शरीर के अन्य भागों की मासपेशियों को अतिरिक्त ओक्सीजन पहुचती है और इससे सारे शरीर में रक्त संचार बढ़ जाता है। इसके साथ-साथ ये पाचन क्रिया को धीमा कर देती है क्योंकि आपतकाल में पाचन क्रिया के कार्य में शरीर की शक्ति नष्ट होने से बच जाती है, और अन्त में इन ग्रन्थियों के प्रभाव से पसीने की ग्रंथियों को प्रभावित कर पसीना तेजी से निकाला जाता है। शरीर को आपत्ति के लिए तैयार करने के लिए बाद के ये सारे प्रभाव ही बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इन्हीं सब कारणों से एडरेनलीन को खेल-कूद या व्यायाम करने वालों का अच्छा मित्र कहा जा सकता है। इसका ये कतई अर्थ नहीं है कि किसी भी खेल-कूद या व्यायाम को प्रतियोगिता के समय अतिरिक्त एडरेनलीन का सेवन करना शरीर के लिए होगा। क्योंकि शरीर के भीतर एडरेनलीन उत्पन्न करने वाली ग्रंथियां शरीर की आवश्यकता के अनुसार एडरेनलीन उत्पन्न करती रहती हैं। तथा ये मात्रा शरीर के बढ़ने के साथ कम या अधिक होती रहती हैं।

प्र० : छुई-मुई के पौधे छूने से मुर्झा क्यों जाते हैं। तथा दूसरे पौधे सूर्य के प्रकाश के साथ क्यों घूम जाते हैं ?

उ० : पौधे अधिक प्रकाश ग्रहण करने या तेज प्रकाश से बचने के लिए अपने पत्तों तथा फूलों को घुमा लेते हैं। यदि एक गमले मे जिरेनियम का पौधा लगा कर खिड़की में रख दिया जाये, तो देखा जा सकता है कि पौधा अधिक प्रकाश ग्रहण करने के हेतु खिड़की के बाहर की ओर झुक जाता है। इसी प्रकार आस्ट्रेलिया में पाये जाने वाले यूक्लिप्टस के पेड़ अपने पत्तों को पेड़ से खड़े रुख मे करके सूरज के तेज प्रकाश से बचते हैं क्योंकि ऐसे रुख बदलने से सूर्य का तेज प्रकाश पत्तों की सतह की बजाये उनके किनारे पर ही पड़ता है। और इसी कारण मध्यान्ह के समय इन पेड़ों की पृथ्वी पर छाया बहुत कम पड़ती है। इसी प्रकार जंगली "लुम्म" के पौधे भी तेज प्रकाश तथा गर्मी से बचने के लिए खड़ा रुख अपना लेते हैं। इन पौधों को "कम्पास" पौधा भी कहा जाता है क्योंकि इनकी पत्तियों के ब्लेड पूरब तथा पश्चिम और किनारे उत्तर तथा दक्षिण की ओर घूमे रहते हैं। पाइलेंड वीड नामक एक और पौधा भी दिशा ज्ञान में सहायता पहुँचाता है। इस पौधे की सहायता से जंगल में शिकारी दिशा पता लगा लेते हैं। परन्तु इन पौधों को यदि बड़े पेड़ों के घने साये में जहाँ तेज धूप तथा गर्मी से हानि का डर न हो, लगाया जाए तो इसके पत्ते साधारण पौधों के समान पृथ्वी के ऊपर सीधे ही रहते हैं।

..... फिर तेरा बाप बोला कि यदि मैं तेरे बिना जिंदा नहीं रह सकता तो मेरे दाह-संस्कार का सारा खर्चा उसके जिम्मे!

भारतीय टेलीग्राफ पौधा तेज धूप में एक बहुत निराले ढंग से व्यवहार करता है। तेज धूप में इसकी कोमल पत्तियां दायें-बायें तथा ऊपर से नीचे को हिलना आरम्भ कर देती हैं. पौधे के नीचले हिस्से की बड़ी पत्तियां हल्के-हल्के हिलती हैं। अंधेरा होने पर इन पत्तियों का हिलना बंद हो जाता है। समझा जाता है कि ये पत्तियां धूप की तेज गर्मी को कम करने के लिए ही हिलती हैं।

भारत में ही पाया जाने वाला छुई-मुई एक ऐसा पौधा है जो छूने पर सिमट जाता है और उसका पतला तना नीचे को झुक जाता है। ये एक बहुत महत्त्वपूर्ण क्रिया विधि द्वारा सम्भव होता है। पत्तियों की पतली डंडी के तेने के जोड़ के स्थान पर कुशन के समान फूला हुआ भाग होता है इसके भीतर का सख्त मध्य चारों ओर से पतली झिल्ली के पानी भरे अणुओं से घिरा रहता है। पौधे को छूने पर, छूने का संवाद पत्तियों तथा डंडियों के रेशों द्वारा यहाँ पहुंचा दिया जाता है। सवाद पहुंचते ही इन अणुओं का जल तुरन्त पौधे के ऊपरी भागों में भेज दिया, जाता, जिससे ये भाग भारी होकर झुक जाते हैं। कुछ बाद में ये पानी फिर नीचे पहुँच जाता है और पौधा सीधा हो जाता है।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

एक दो तीन

हर देश के निवासियों की अपनी अलग आदत व व्यवहार करने का ढंग होता है। एक देश के निवासियों की कई बातें बहुत समान होती हैं। जब अकेला होता है तो क्या करता है। दो मिलने पर क्यों खिचड़ी पकती है और तीन इकट्ठे हो जायें तो क्या गुल खिलते हैं। हमने कई देशों के लोगों को पकड़ा है जो अपने-अपने देश के राष्ट्रीय चरित्र का दीवाना रूप आपके सामने झांकी के रूप में बगैर टिकट लिये प्रस्तुत कर रहें है। झांकी का यही रूप है कि एक विशेष देश का निवासी अकेला क्या करता है। दो मिलने पर क्या होता है और तीन इकट्ठे हो जायें तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ता है?
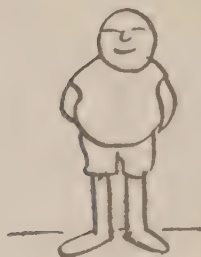
एक नेपाली	दो नेपाली	तीन नेपाली
चौकादारी करेगा।	एक दूसरे को बम्बई जाकर बेच आयेगा।	गोरखा रेजीमेंट की स्थापना करेंगे।
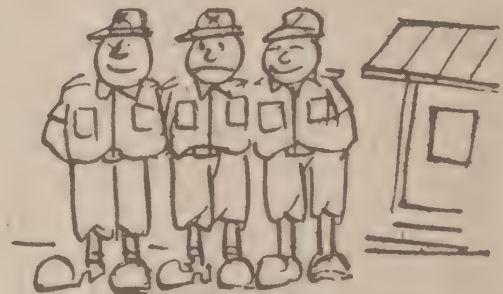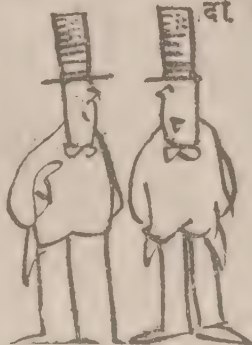
एक अमरीकी	दो अमरीकी	तीन अमरीकी
कोका कोला पीयेगा।	लेटेस्ट माडल की कार के बारे में बातचीत करेंगे।	सब हिप्पी बन जायेंगे व चरस पियेंगे।
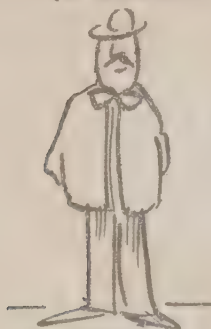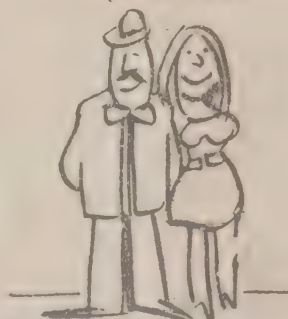
एक फ्रांसीसी	दो फ्रांसीसी	तीन फ्रांसीसी
शराब निकालेगा।	दो हों तो एक मादा जरूर होगी और शादी करेंगे।	उनमें से एक दूसरे की बीबी को भगा ले जायेगा।

एक अरब
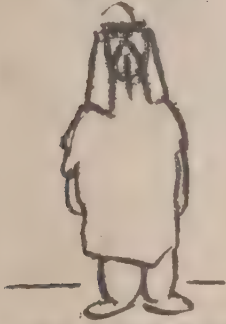
अपनी बेगमों की संख्या बढ़ायेगा ।

दो अरब
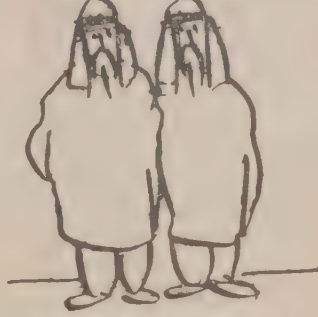
मिल कर जहाज हाइजैक करेंगे ।

तीन अरब
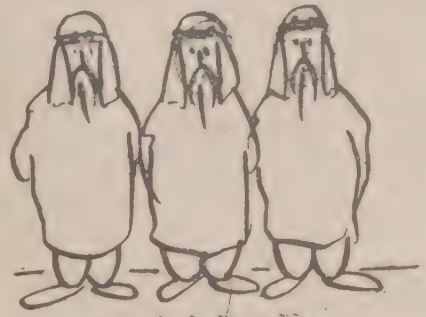
तेल की कीमतें बढ़ा देंगे ।

एक हिन्दुस्तानी

कनाडा या इंगलैंड जाने के लिये वीसा प्राप्त करने की कोशिश करेगा ।

दो हिन्दुस्तानी

एक दूसरे पर सी. आई. ए. एजेंट होने का आरोप लगायेंगे ।

तीन हिन्दुस्तानी

तीनों मिल कर पार्टी बनायेंगे और फिर आपस में लड़ पड़ेंगे व पार्टी को तोड़ कर उसके टुकड़े करेंगे ।

एक रूसी

वोदका की बातलें खाली करेगा ।

दो रूसी

अमरीका भाग निकलने की योजना बनायेंगे ।

तीन रूसी

कोई नहीं बोलेगा क्योंकि तीनों में से कोई एक खुफिया पुलिस का आदमी होगा ।

एक पाकिस्तानी

काश्मीर लेने के सपने देखेगा ।

दो पाकिस्तानी
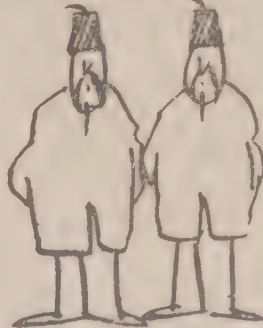
सरकार का तख्ता पलटने का षड्यंत्र रचेंगे ।

तीन पाकिस्तानी
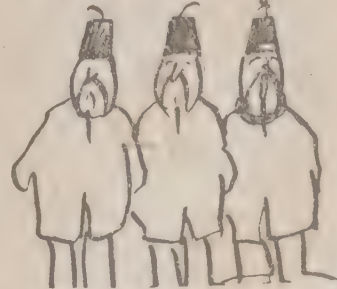
दो मिल कर तीसरे को फांसी पर चढ़ा देंगे या गोली मार देंगे ।

मारे गये गुलफाम

आलिवर आटो

एक ओर वर्षा का ताण्डव नृत्य देश भर में व्याप्त था, वहीं दूसरी ओर वर्षा कालीन सत्र में घटकवादियों का उत्पात। विघटन की स्थिति स्पष्ट नजर आ रही थी।

प्रदेश के परिवहन मंत्री श्री विश्राम सिंह पर जब एकता स्थापित करने का भार सौंपा तो उन्होंने अपने गृह नगर जाकर चिन्तन-मनन का विचार व्यक्त किया और दूसरे ही दिन वायुयान द्वारा राजधानी से प्रस्थान कर गृह नगर जा पहुंचे।

पत्रकार वार्ता में मंत्री जी ने साफ-साफ कह दिया कि मैं आपके किसी भी प्रश्न का उत्तर देने में पूर्णतया असमर्थ हूँ। पार्टी में बढ़ती दरार पर एकता का एक मजबूत पुल बनाना है और इसमें आपका सहयोग चाहता हूँ। कृपया मुझे एक सप्ताह तक न छेड़ें। और उन्होंने अपने बंगले के सिंह द्वार (मंत्री बनने से पहले वह एक मामूली सा दो कमरों का मकान था) बद्रीनाथ के कपाटों की तरह बंद कर लिये।

किन्तु शीघ्र ही तीसरे दिन जब मंत्री जी ऊब गये तो नौकर से बोले—"अरे भाई गनेस···हम बहुत ही बोर हो गये हैं, मारुती से कहो कार निकाले।" आदेश का पालन किया गया और एक शेवरलेट पोर्च में आ रुकी।

मंत्री जी कार में समाते हुए मारुति से बोले···

—"अरे भाई मारुति जहाँ मर्जी आये चले चलो।" कार तुरन्त चल पड़ी। मारुति प्रसन्न था कि आज मंत्री जी पर उसकी मर्जी चल रही है। मारुति ने सोचा कि क्यों न शहर से बाहर उत्तर दिशा में चले। बाबा धर्मेन्द्र ब्रम्हचारी के दर्शन कई दिनों से नहीं हुये। और अपनी कमलिया की झाँकी चितवन के दीदार।

शहर से बाहर जाने वाली वह सड़क आगे चल कर राजमार्ग से जुड़ती थी और उस सड़क पर शहर के सारे ही ट्रांसपोर्ट गोदाम व कार्यालय थे। सबसे व्यस्त सड़क थी वह। तेजी से दौड़ती हुई कार अभी तीन चौथाई सड़क पार कर पाई थी कि अचानक एक धमाका हुआ। कार का पिछला पहिया पंक्चर हो गया था। मारुति की स्थिति दयनीय हो गई, कार में स्टैपनी जो नहीं थी। मंत्री जी नीचे उतरने लगे। अभी पहला पाँव जमीन पर पड़ा ही था कि बगल से गुजरते ट्रक ने ढेर सा कीचड़ उछाल दिया। मंत्री जी के सफेद कपड़ों पर कीचड़ के छींटे पार्टी में विघटन वादी तत्वों की तरह दृष्टि गोचर होने लगे। मंत्री जी तिलमिला उठे। दरवाजा तुरन्त बंद किया और दूसरी तरफ का दरवाजा झटके से खोल कर उतर पड़े। वह तो गनीमत थी कि मारुति पास ही खड़ा टायर देख रहा था, उसने तुरन्त मंत्री जी को गिरते से संभाल लिया वरना रास्ते पर बने गड्ढे में मंत्री जी का पैर टखनों तक गंदे पानी में समा गया था। मंत्री जी अपनी दीन अवस्था पर रुंआसे हो चले। अब वापस लौटने की समस्या उत्पन्न हुई तो मारुति ने सलाह दी।

—"सर, रात घिरती जा रही है, हल्की-हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई है, आप अगर रिक्शे से घर निकल जायें तो अच्छा रहेगा। भला अब इस हालत में आप को कौन पहचान पायेगा···?" मंत्री जी को सलाह जंच गई। तुरन्त रिक्शा बुलाया गया। और मंत्री जी उसमें समा गये। रिक्शा तेजी से गन्तव्य की ओर बढ़ चला। रिक्शे में बैठे मंत्री जी अपने आपको कु[illegible] अस्वस्थ सा महसूस करने लगे। वह सड़[illegible] अभी खत्म नहीं हुई थी कि रिक्शा दचक[illegible] पर दचके लगाता हुआ बढ़ा जा रहा था। अगल-बगल से गुजरते ट्रकों के टायर रास्[illegible] पर बने डबरों से खुल कर छेड़-छा[illegible] कर रहे था और उछलता हुआ कीच[illegible] रिक्शा और सवारी को सराबोर कर रह[illegible] था।

बंगला करीब आते तक मंत्री जी की स्थिति नाजुक हो चुकी थी। बड़ी मुश्किल से रिक्[illegible] से उतरे, किराया चुकाया और फाटक प[illegible] झूल गये। चौकीदार ने मंत्री जी की हालत देख[illegible] तो तुरन्त गणेश को सहायतार्थ बुलाया औ[illegible] मंत्री जी को दोनों की सहायता से खींचता[illegible] कर अन्दर लाया गया और उनके पलंग प[illegible] फैला दिया गया। जब तक मंत्री जी बेहोश हो चुके थे। नौकर चकराये, फौरन फोन करके फैमिली डाक्टर को बुलाया। कैसी विडम्बना थी कि सत्र में जाने से पहले मंत्री जी ने पत्नी और बच्चों को उनके मायके भेज दिया था। डाक्टर आया और आधे घंटे तक मगज पच्ची करता रहा मगर बेहोशी का कारण न जान सका। मंत्री जी को न तो हृदय रोग था, न रक्त चाप, न गुर्दे की बीमारी, न मिर्गी का रोग। फिर भी उसने ग्लूकोज की बोतल चढ़ाई और दो इंजेक्शन कमर में ठूंस दि[illegible] लेकिन नतीजा शून्य। डाक्टर खुद घबरा गया। उसने फौरन मेडीकल कालेज के डीन से सम्पर्क साधा, एम्बूलेंस बुलाई और एक आराम देह कमरा तुरन्त सजाया गया तथा मंत्री महोदय को मेडिकल कालेज में भर्ती कर दिया गया। देखते ही देखते समस्त विशेषज्ञ उपस्थित हो गये तथा अपने-अपने मर्ज का जांच करने लगे। लेकिन सब व्यर्थ। मंत्री जी अभी भी अचेत पड़े थे।

आखिरकार मुख्य मंत्री को ट्रंककाल किया गया और सारी वस्तु स्थिति समझा बुझा कर निवेदन किया गया की आप तुरन्त अपना वायुयान भेज दें ताकि मंत्री जी को लोहिया या जसलोक अस्पताल या फिर सूरज कुंड भेजा जा सके।

सुबह-सुबह बेहोश मंत्री जी को लेकर चार विशेषज्ञ दिल्ली प्रस्थित हुए। दिल्ली के डाक्टरों के लिये भी मंत्री जी की बेहोशी यंत्रशिला सा प्रश्न-चिन्ह बन गई। परीक्षण

शेष पृष्ठ ३६ पर

दीवाने कार्ड को मोड़कर देखिये

दोनों अंगुलियों को आपस में मिलाइये

RADIO PAKISTAN
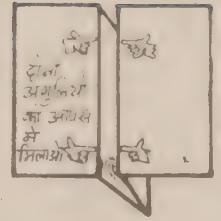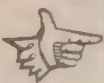
चार अप्रैल मंगलवार की सुबह अढ़ाई बजे पाकिस्तान के बर्बर फौजी शासकों ने सर्वाधिक लोकप्रिय नेता भुट्टो को फांसी पर चढ़ा दिया। मुस्लिम मजलिस पार्टी के जोकरों ने जनरल जिया की पीठ ठोकी। पाकिस्तान ही नहीं सारी दुनिया खबर को सुन कर सन्न रह गयी। भुट्टो की मृत्यु से पाकिस्तान के भविष्य पर क्या असर पड़ेगा यह तो अभी ठीक ठीक से कह सकना मुश्किल है। पाकिस्तान में आंतरिक युद्ध छिड़ सकता है। पाकिस्तान टुकड़ों में बट सकता है। कुछ भी हो सकता है। फिर एक बात जो होने वाली है उसके बारे में हमें शक नहीं है। यह क्या है पृष्ठ मोड़ कर देखिये।

पृष्ठ ३४ से आगे

का क्रम पुनः दोहराया गया और इस बार एक्स-रे रिपोर्ट देखते ही डाक्टर दंग रह गये। मंत्री जी के शरीर के समस्त जोड़ उखड़े हुए थे। सारी हड्डियां सरकी हुई थीं, और जोड़ों में सूजन आ गई थी लेकिन ऐसा होने का कारण अज्ञात था।

बाहर पत्रकारों का एक जत्था बैठा हुआ, किसी ताजे समाचार का इन्तजार कर रहा था। गलती से एक डाक्टर ने पत्रकारों को एक्स-रे रिपोर्ट का ब्यौरा दे दिया, साथ ही अपने विचार भी व्यक्त कर दिये कि—'लगता है जैसे मंत्री जी को किसी ने पकड़ कर बुरी तरह से झिंझोड़ दिया या यूं समझ लो कि पूरा शरीर पकड़ कर निचोड़ दिया हो और फिर झटकार दिया हो। जैसे कपड़ा सुखाने के समय करते हैं।

चन्द मिनटों में ही सारे पत्रकार तितर-बितर हो गए, कुछ अपने प्रेस भागे तो कुछ टेलीप्रिन्टर पर समाचार भेजने। शाम होते न होते सभी बड़े-बड़े पेपरों का एक विशेष बुलेटिन प्रसारित हो गया। हर पेपर के पत्रकार ने एक-एक कहानी गढ़ कर छापी थी। सारे प्रदेश में सनसनी फैल गई।

और इधर मंत्री जी के गृह नगर से प्रसारित होने वाले अखबार ने तो शहर में तहलका ही मचा दिया। उसने मंत्री जी की इस दशा का जिम्मेदार विरोधी पक्ष को ठहराया। कुछ लोग विघटन वादियों की कुछ करतूत कहने लगे। सारे शहर में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। कलैक्टर ने धारा १४४ लागू कर दी। सत्ताधारियों ने स्पष्ट आरोप लगाया कि विरोधियों ने मंत्री जी को सुनसान सड़क पर अकेला पाकर धर पकड़ा और बोरों में लपेट कर तेल पिलाई हुई लाठियों से मारा है ताकि अन्दरूनी चोट पहुँचे, सारी हड्डियाँ टूट जायें और पोर-पोर हिल जाये मगर खून न निकले।

लोगों का यह तर्क बहुत जंचा। उधर विरोधियों ने कहा कि मंत्री जी घटकवादियों का शिकार हुए हैं। और फिर ये भी तो संभव है कि मंत्री जी जिस क्षेत्र से जीते हैं उसी क्षेत्र से असन्तुष्टों का बागी उम्मीदवार खड़ा हुआ था जो हार गया था तथा बाद में आपकी पार्टी के अध्यक्षों द्वारा छः साल के लिए निष्काषित कर दिया गया था। वह बागी उम्मीदवार शहर के मशहूर गुण्डों में से एक है। उसने अपना बदला निकाला है। विरोधी पार्टी का यह तर्क भी लोगों को सही लगा। बस फिर क्या था। दंगे फसाद शुरू हो गये। नौबत गोली चलने की आ गई, ३ व्यक्ति जख्मी हुए और शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया।

लोक सभा में अलग हंगामा खड़ा हो गया। विपक्षी दल अपने ऊपर लगाए गए आरोपों से रुष्ठ हो कर बहिर्गमन कर गया। वहीं मंत्री जी के घनिष्ठ सांसदों ने मामला सी० बी० आई० को सौंपने की अपील की। वर्षाकालीन सत्र को कुछ दिनों के लिए स्थगित कर दिया गया।

करीब दसवें दिन मंत्री महोदय को होश आया, डाक्टरों ने राहत की सांस ली। मंत्री महोदय की सारी हड्डियां यथा स्थान पर बैठा कर प्लास्टर कर दिया गया था इसलिये वे हिलडुल भी नहीं सकते थे। यह मामला अब तक सी० बी० आई० के सुपर्द किया जा चुका था। उनके होश में आने की खबर ने पुनः एक बार अखबारों की सुर्खियों का स्थान लिया तथा नया दौर अटकल बाजियों और अफवाहों का शुरु हो गया। सी० बी० आई० के अधिकारी ब्यान लेने मंत्री महोदय के पास पहुंचे तो कराहते हुए मंत्री जी ने कहा—"अरे भाई···पूछिये जो पूछना है" अधिकारियों ने सारा वृतान्त सुना जो उनकी बेहोशी के दौरान हुआ था। फिर पूछा कि आप अब यह बतलाइये कि किस पार्टी अथवा व्यक्ति ने आपके साथ यह दुर्व्यवहार किया है···?" पीड़ा से विकृत चेहरे पर फीकी सी मुस्कान लाकर मंत्री महोदय बोले—"अरे भाई मैंने जिन्दगी में सच ही बोला है. मैं क्यों किसी गरीब को फसाऊं···क्यों विरोधियों पर झूठे आरोप लगाऊँ। मैं तो जिस रात अस्वस्थ हुआ था उसी शाम घूमने गया था। रास्ते में कार खराब हो गई तो मैंने रिक्शे से घर लौटना बेहतर समझा। अन्धेरा था, रास्ते पर पानी भरा हुआ था। स्ट्रीट लाईट बन्द थी और रिक्शे वाला भरा पूरा जवान था। बस यह सब उसी का नतीजा है।"

अधिकारी गण चौंक उठे—"तो फिर अवश्य ही अन्धेरे का लाभ उठा कर उस रिक्शा वाले ने आप को लूट लिया होगा और उसी से छीना-झपटी में आपको···।

"अरे नहीं भाई···वह नौजवान शरीफ था। उसने मुझे पहचान लिया [illegible] और बारिश तेज न हो जाये, मैं भीग जाऊँ यह सोचकर तो बहुत तेजी से रि[illegible] चला कर मुझे बंगले में पहुँचा दिया।"

अधिकारी ग्रुप अब तक खीज चुके [illegible] —"तो क्या आपको भूतों ने पकड़ कर म[illegible] था।"

—"अरे नहीं भा···ई, वो रा[illegible] ज्यादा ऊबड-खाबड और झटकों से भरा [illegible] कि क्या बताऊँ? मेरा यह हाल तो रि[illegible] में बैठे-बैठे दचके खाकर हो गया है। भग[illegible] न करे कोई मंत्री कभी ऐसे रास्ते से गुज[illegible] और इतना कहकर मंत्री महोदय हा[illegible] लगे। तुरन्त एक खूबसूरत नर्स आई [illegible] अधिकारियों से निवेदन किया कि आप [illegible] अब और कष्ट न दें। डाक्टरों ने मंत्री [illegible] को दो माह का पूर्ण विश्राम करने [illegible] सलाह दी है।

अधिकारीगण उठ खड़े हुए, उ[illegible] अधरों पर विजयी मुस्कान थी कि कित[illegible] पेचीदा मामला चुटकियों में हल हो ग[illegible] था। बाहर निकले तो पत्रकारों ने आ घेर[illegible]

दूसरे दिन समाचार पत्रों ने जब म[illegible] जी का बयान छपा तो तब कहीं जा [illegible] सारा मामला लोगों की समझ में आय[illegible] वर्षा कालीन सत्र पुनः आरंभ हो गया [illegible] सब कुछ सामान्य हो गया।

उस रास्ते पर स्थित कम्पनियों त[illegible] रहने वालों में आशा कि किरण जागी [illegible] शायद अब उस रास्ते का जिर्णोद्धार [illegible] जाये जिसके कारण इतना बड़ा काण्ड हु[illegible] ···किन्तु वह रास्ता आज भी उसी प्र[illegible] है बल्कि अब उससे भी बदत्तर हालत [illegible] नगर निगम वालों के कान ही नहीं है इस[illegible] जूँ रेंगने का प्रश्न ही नहीं उठता। पहले [illegible] जनता उस रास्ते से गुजरती थी और अ[illegible] भी गुजरती है। लेकिन उस घटना के [illegible] से मन्त्री तो दूर, विधायकों, यहां तक [illegible] वार्ड मैम्बरों ने भी वहां से गुजरना बंद [illegible] दिया है। नगर निगम कम-से-कम इतना [illegible] कर ही सकती है कि रास्ते के दोनों [illegible] बोर्ड लगा दे···जिसमें लिखा हो···

'मंत्रियों, सांसदों एवं राज्य तथा के[illegible] के उच्चाधिकारियों हेतु निषेध'।

इन श्रीमती जी को देखिये इसके पतिदेव दो दिन से घर नहीं आये हैं।

सवाल यह है

कि इनका पति गया कहाँ ?

पुलिस स्टेशन जाकर यह सवाल किया, तो जरा इंस्पैक्टर साहब का उत्तर सुनिये।

आप का पति किन विचारों का है, जरा यह सोचिये ? फिर उसे ढूंढ़ना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा। हम बताते हैं, आपका पति कहाँ होगा।

यदि वह आर० एस० एस० का है तो किसी जनसंघी मंत्री की डाईनिंग टेबल के नीचे बैठा तमाम मंत्रियों की शाखायें लगाने और उन्हें नेकरधारी बनाने की योजना बना रहा होगा।

यदि सी० आई० ए० का है तो खुद कांच के घर में बैठा दूसरों पर पत्थर मार रहा होगा।

यदि स्वर्णसिंह कांग्रेस के हैं तो इन्द्रा कांग्रेस के कैम्प में घुसपैठ करने के लिए उसके टेन्ट में कोई फटी हुई झिरी तलाश कर रहा होगा।

यदि इन्दिरा कांग्रेस का है, तो झण्डा उठाये कहीं नारे लगा रहा होगा।

और अगर जनता पार्टी का है, तो किसी अस्पताल में पड़ा होगा।

ही ही ही

● एक (तीसरे आदमी के बारे) में वह कहता है कि वह तुम्हारा सम्बंधी है ।

दूसरा—बेवकूफ है वह ।

पहला—ठीक ! फिर तो तुम्हारा सम्बंधी हुआ ।

● एक साहब सड़क किनारे बने एक रेस्टोरेंट में गये और चाय-समोसे मंगाये ! समोसे आ गये तो उन्होंने वेटर से पूछा, 'यह क्या चार सौ बीसी है ? कल भी मैं आया था । कल तो इन समोसों से दुगने बड़े और बढ़िया तले हुए समोसे थे । यह तो छोटे-छोटे और गंदे समोसे हैं ।'

वेटर बोला, 'साहब, कल आप खिड़की के साथ वाली सीट पर बैठे होंगे ।'

वह साहब—'हां । लेकिन उसमें फर्क क्या पड़ता है ?'

वेटर—साहब उन सीटों पर बाहर चलते लोगों की नजर पड़ती है, इसीलिए हम बड़े-बड़े समोसे देते हैं ताकि वह ललचा जायें ।'

● एक लड़की सहेली से, 'मुझे बनाने वाले लड़कों से चिढ़ है ।' सहेली, 'मुझे तो बनाने वाले अच्छे लगते हैं जैसे रमेश जिसने पिछले महीने ही दस हजार बना लिये ।'

● दो मित्र थे उनमें से एक बीमा एजेंट बन गया । उसने सोचा पहले अपने मित्र का ही बीमा किया जाये । उसके घर गया तो मित्र ने खाने पर रोक लिया । पत्नी ने खाना खिला दिया तो एजेंट मित्र बोला, 'चलो खाना खा लिया । अब तो मैं जरूर तुम्हें अपनी जिंदगी का बीमा करवाने की सलाह दूंगा । मित्र, 'मेरी बीबी का खाना इतना बुरा तो नहीं था ।'

● बेवकूफों से कभी बहस मत करो ! आसपास खड़े लोगों को पता नहीं लगेगा कि बेवकूफ कौन सा है ।

● एक प्रसिद्ध डाक्टर ने सैक्रेटरी रखी । वह उसके काम से प्रसन्न नहीं हुआ और नौकरी समाप्त कर दी । जाते हुये सैक्रेटरी ने डाक्टर से उनके पास काम करने का प्रमाण पत्र मांगा ।

डाक्टर ने कहा, 'देखो, मैं गलत बात कभी नहीं लिखता इसलिए तुम्हें अच्छा प्रमाण पत्र नहीं दे सकूंगा ।'

सैक्रेटरी—'कोई बात नहीं, जो कुछ लिखना हो लिख दीजिए । लेकिन वैसा ही लिखिये जैसे आप मरीजों के नुस्खे लिखा करते हैं ताकि कोई ठीक से पढ़ न सके ।'

● एक व्यक्ति अपने मित्रों को अपने पहले क्रिकेट मैच देखने के अनुभव सुना रहा था, 'फिर ग्यारह व्यक्ति मैदान में आ गये । इनके पीछे-पीछे दो सफेद ओवर कोट पहने साहेबान आये और मैदान के बीच एक-दूसरे से कुछ दूर खड़े हो गये । कुछ देर बाद दो और हाथों में चपटे लम्बे लट्ठ लेकर आये तथा बीच मैदान में आमने-सामने खड़े हो गये । मैदान में खड़े लोगों में से एक दौड़ कर गया और लट्ठ वाले आदमी की तरफ गेंद फेंकी । लट्ठ वाले ने अपना लट्ठ घुमा कर गेंद को दे मारा ।'

दोस्तों ने पूछा, 'फिर क्या हुआ ?'

वह व्यक्ति —'होता क्या ? मैंने अपनी बीबी को पकड़ कर आगे न कर दिया होता तो गेंद सीधे मेरा सिर फाड़ गयी होती ।'

● प्रसिद्ध वैज्ञानिक अर्नेस्ट रुद्रफोर्ड बचपन में बहुत भोले थे । वे एक बार की कहानी छात्रों को बताने लगे, 'मेरी मां ने मुझे घास चरने जंगल गयी गाय को लाने के लिए कहा और कहा कि आते हुए लकड़ी भी लेते आना । मैं गाय हांक कर लाने लगा और साथ ही पीछे एक बहुत बड़ी टहनी भी घसीट कर खींचते हुए ला रहा था । तभी मैंने सोचा कि यह टहनी गाय की पूंछ में बांध दूं । यह खुद खींच ले जायेगी । मैंने रस्सी से टहनी पूंछ के साथ बांध दी । गाय मजे से टहनी खींचती ले गई । घर से कुछ दूर एक तंग गली आयी और ट
गयी । गाय ने जोर लगाया तो
गयी। मैंने गाय की पूंछ पर प्ल
दिया । गाय को कोई विशेष कष्ट
क्योंकि वह पहले की तरह रम्भा
से घूम रही थी ।'

विद्यार्थियों ने पूछा, 'टूटी
आपने क्या किया ?'

रुद्रफोर्ड बोले, 'मैंने उसे ज
दिया क्योंकि सुना था कि गाय क
जाए तो वह उग आती है ।'

● वकील एक गवाह से—
हो कि तुम अशिक्षित हो परंतु
सवालों का जवाब तो खूब दिया ।

गवाह—'आपके सवालों के
कोई भी बेवकूफ दे सकता है ।'

● एक स्त्री दांतों के ड
'डाक्टर साहब आप कहते हैं कि
में छोटा सा छेद है लेकिन जब मैं
जबान लगाकर देखती हूं तो छेद
लगता है । ऐसा क्यों है ?'

डाक्टर, 'आपको पता ही है
की जबान हर बात खूब बढ़ा
कहती है ।'

● राम—'तुम्हारी नौकरी
रही है आजकल ?'

शाम—बहुत बढ़िया । पचास
मेरे नीचे काम करते हैं ।

राम—सचमुच तुम इतने ब
बन गये ?

शाम—'मैंने कहां कहा कि
बन गया हूं । मैं ऊपर वाली मंजिल
करता हूं नीचे वाली मंजिल में प
चारी काम करते हैं ।'

दोस्तों में बैठकर विनोद
देखते हुए हंसकर कहा,
दिलचस्प घटना घटी
आएगा...'' सुरेन्द्र ने
से उसे रोकना चाहा
हंसकर सुरेन्द्र को थप्पड़
रा ही
लगाए। सुरेन्द्र
रहा था वह विनोद
ता हुआ बोला—
'कभी तुमसे भी समक्ष

कों में उड़ गई...लेकिन
विनोद के प्रति प्रतिशोध
ही थी...इसे विनोद ने
लेकिन वह कुछ बोला
रहा...यह हँसी उसकी
न्तु केवल तब तक जब
में घिरा रहता था...
से कोसों दूर रहती थी।

अनोखी लड़की पर
थे...उसके चरित्र पर
राय दी...तभी विनोद
वह इस मुहल्ले में नई-
के साथ केवल उसकी
विनोद दोस्तों से अलग
तष्क में कोई घुटन नहीं

मां और पिता जी
ब्योरा तैयार कर रहे
आने वाले मेहमानों की
टी पर था...विनोद को
हंसते हुए उसे पास
कि बीस रुपए उसे भी
दिए जाएंगे...इस मद
व्यय का अनुमान था...
गया और उसने पूछ

...यह तीन सौ रुपये

...पिताजी ने एक बार
की ओर देखा...फिर
गये...कुछ क्षण बाद
थ फेरते हुए बोले—
हीं न कहीं से—तुम
?'

विनोद के मन में आया कि उनसे कहे कि वह जानता था यह रुपये कहां से आयेंगे—सिवाय कर्ज के और आ ही कहां से सकते थे...? उसने यह भी सोचा कि पिता से पूछे कि वह सब यह क्या कर रहे हैं? ...बातों के परिणाम पर भी कभी उन्होंने ...लेकिन वह कुछ भी न ...बस, चुपचाप उठकर अपने कमरे में चला आया...।

इसके एक सप्ताह बाद की बात है—

विनोद का विचार था कि यह दोपहर को थोड़ा समय पढ़ेगा लेकिन इस विचार पर वह कार्यान्वित न कर सका क्योंकि मां और दादी जी के बीच बड़ा भयंकर युद्ध छिड़ गया था...दादी मां के सपूतों को हाथ फैला-फैला कर कोस रही थीं और मां को गहरे गड्ढे में सो जाने की बद-असीस दे रही थी...इस समय कोई नहीं कह सकता था कि दादी पागल हैं...उनकी हर बात बुद्धिमत्ता की थी...वैसे भी वह केवल अपनी बहू से ही बैर रखती थीं और बहू के मायके वालों से ऐसे बिदकती थीं जैसे बिगड़ा घोड़ा परछाईं से...इसके विरुद्ध अपनी बेटी और बेटी के बच्चों को सदा असीस ही दिया करतीं...इस युद्ध को देखकर विनोद हमेशा पागल-सा हो जाता था...उसका जी चाहता कि वह अपनी मां को लेकर कहीं दूर चला जाए—उस दिन भी ऐसा ही हुआ था...वह अपनी मां और दादी की लड़ाई से तंग आकर घर से निकल आया था...बस, निरुद्देश्य ही सड़क पर निकल कर उसने सोचा कि मोहन को बुला ले...मोहन उसके दोस्तों में सबसे अधिक हंसोड़ था...उसकी बात-बात में कोई चुटकुला होता...कोई हंसी का पहलू होता...विनोद ने सोचा था कि मोहन के साथ कुछ समय हंसी-खुशी में कट जाएगा—वह यही सोचता हुआ जा रहा था कि अचानक किसी ने उसे पुकारा और वह चौंक पड़ा—

'ऐ...बात सुनो...?'

वह घबराकर रुक गया क्योंकि उसे पुकारने वाली वही लड़की थी जिसने सुरेन्द्र के मुंह पर थप्पड़ मारा था।

'तुम कौनसी क्लास में पढ़ते हो?' उस लड़की ने बिल्कुल ऐसे पूछा जैसे दो लड़के प्रथम परिचय के समय एक दूसरे से बात करते हैं।

'न...न...नौवीं कक्षा में...।' विनोद ने घबराकर उत्तर दिया।

'बहुत ठीक...तुम मुझे पढ़ा दिया करोगे?'

'प—प—पढ़ा दूंगा...।' विनोद की बौखलाहट बढ़ गई क्योंकि उसने सुरेन्द्र को आते देख लिया था।

'मैं रात से आऊंगी...।' लड़की ने कहा और आगे बढ़ गई।

सुरेन्द्र के पास से वह इस प्रकार गुजरी जैसे उसने पहले उसे कभी देखा ही न हो...सुरेन्द्र ने विनोद के पास आकर व्यंग से कहा—

'क्यों बेटे...पकड़े गये ना...डोरे डाल रहे थे?'

'भगवान् कसम सुरेन्द्र भैया...बिल्कुल सड़ी मालूम होती है।'

'क्या कह रही थी?'

'कह रही थी तुम मुझे पढ़ा दिया करो।'

उपकार

—आजाद रामपुरी

मंत्री जी बोले—
भाइयों सफलता का फूल,
श्रम—साधना से ही खिलता है।
मोती,
अथाह सागर में डूबने पर ही—
मिलता है।
इसलिये तुम एक-एक करके—
डूबकर,
मोती ऊपर उछाल दो तो
हम नेता लोग,
उन्हें हाथों पर उठा लेंगे।
तुम डूब कर मर जाओगे तो क्या,
हम मोतियों की शकल,
तुम्हारी संतानों को तो बता देंगे।

'ओहो...' सुरेन्द्र के स्वर में व्यंग भी था और जलन भी, 'तो मामला काफी आगे बढ़ चुका है।'

'भगवान् कसम...मैंने तो कभी इससे बात भी नहीं की...वैसे मिला रोज ही करती थी...रास्ते पर...।'

फिर सुरेन्द्र के साथ वह राजेश की बैठक पर चला आया...मोहन भी वहीं था ...इस बार सुरेन्द्र ने खूब नमक-मिर्च लगा कर विनोद की नई 'ट्यूशन' के बारे सबको बताया...मोहन और राजेश देर तक उसका मजाक उडाते रहे लेकिन विनोद उनके मजाक को ठहाकों में ही उड़ाता रहा।

रात को वह अपने कमरे में स्टडी कर रहा था...मां और पिताजी बड़े कमरे में थे...इतने में वही लड़की आ गई...बेधड़क कमरे में घुसकर वह सीधी मां के पास आई और बोली—

'विनोद कहाँ है ?'

पिताजी, मां और कामिनी ने एक साथ उसे सिर से पांव तक घूरा...फिर मां ने पूछा—

'क्या काम है तुम्हें विनोद से ?'

'पढ़ूंगी उनसे...।' लड़की ने बड़ी बेपरहवाही से उत्तर दिया।

'इन्हें विनोद का कमरा बता दो बेटी...।' पिताजी ने कामिनी से कहा।

कामिनी के होंठों पर शरारत-भरी मुस्कराहट फैल गई...लड़की ने भी इसे अनुभव कर लिया...उसने कामिनी को ऐसी नजरों से घूरा कि वह सचमुच बौखला गई

...उसकी आंखों में न जाने कैसी शक्ति थी जो सामने वाले को भयभीत कर देती थी... लड़की वहीं खड़ी रही...मां ने उसे देखते हुए कहा—

'जाओ बेटी...!'

'इनकी मुस्कराहट बड़ी खराब थ., लड़की ने कामिनी की ओर संकेत करके तीखे स्वर में कहा, 'और मैं ऐसी मुस्कराहट देखने की अभ्यस्त नहीं हूं...अगर आपको कोई सन्देह या आपत्ति हो तो बेहतर होगा कि आप मुझे अभी मना कर दें...मैं वापस चली जाऊंगी, मैं आपको यह भी बता दूं कि विनोद से इससे पहले मेरी कभी बात नहीं हुई...आज मैंने स्वयं ही उनसे कहा था कि मुझे पढ़ा दिया करें—मैं एक गरीब लड़की हू और पढ़ने का मुझे चाव है।'

'नहीं बेटी...' माँ ने आत्मीयता से कहा, यह लड़की तो वैसे ही नटखट है... इसकी चिन्ता न करो...जाओ पढ़ो।'

'मेरा नाम सरिता है—' लड़की ने स्वयं ही अपना परिचय कराया।

फिर वह कामिनी के स... लिखा क्योंकि वह... कमरे में चली गई...पिताजी की आंख... से घूम रही थीं कि वह सरिता की बातों से प्रभावित हुए हैं। विनोद सरिता को देखकर हड़बड़ा कर खड़ा हो गया।

'बैठ जाओ...' सरिता ने अपनी पुस्तकें रखते हुए कहा, 'मैं पढ़ने आई हूं, पढ़ाने नहीं...मुझे तुम्हारा आदर करना चाहिए।'

विनोद शर्मिन्दा-सा होकर बैठ गया... कामिनी ने उसका दाहिना कान मरोड़ा और हंसती हुई भाग गई। विनोद ने पलटकर उसे डांटा और सरिता की ओर देखकर झेंपते हुए हंसने लगा...लेकिन सरिता गम्भीर थी इसलिए वह और भी झेंप गया।

"तुम्हारे साथ उस दिन जो लड़का था वह कौन था ?" सरिता ने पुस्तक खोलते हुए विनोद की ओर देखकर पूछा।

"सुरेन्द्र—मेरा दोस्त है।" विनोद ने उत्तर दिया।

"वह तुम्हारा दोस्त नहीं हो सकता—वह अच्छा लड़का नहीं है—।"

"जी—" निनोद घबरा गया।

"बल्कि तुम्हारे साथ रहने वाले किसी लड़के को भी में पसन्द नहीं करती।"

"फिर मुझसे पढ़ने क्यों आई हैं...मैं भी तो उन्हीं के साथ रहता हूँ।"

"मेरी आयु तो केवल पन्द्रह वर्ष की है...लेकिन मेरी आंखें पचास वर्ष की आयु का अनुभव रखती हैं," सरिता ने गम्भीरता से कहा, "तुम उन सब में अलग मालूम होते हो...मानव के चेहरे से उसके चरित्र का अनुमान लगाया जा सकता है—मैंने बहुत बार तुम्हें उन लोगों के साथ देखा है... मेरा विचार है कि उनके साथ रह... सम्बंध में तुम अपने आप से जबरदस्ती... हो।"

विनोद चुप भी था और चकित ... गाय का कोई विशेष ...छ कह रही थी... क्योंकि वह पहले की तरह ...दान थी। ... 'तुम्हारा ... अभी कोई ... रास्ते पर नहीं ढला,' ...रिता ने कहा, "... तुम अगर उनकी संगत में अधिक रहे... बिल्कुल वैसे ही हो जाओगे।"

विनोद ने कुछ कहना चाहा किन्तु... न सका...और सरिता बिना समय नष्ट... उससे पढ़ने लगीं। विनोद उससे कुछ ... अधिक प्रभावित हो गया था कि वह उ... नाम तक न पूछ सका उसने यह भी... पूछा कि वह कौन-सी कक्षा में पढ़ती... जब वह पढ़कर चली गई तो वह बड़ी... तक इस अनोखी लड़की के चरित्र के... में सोचता रहा...लड़कियाँ तो उसकी ... से कई गुजरी थीं लेकिन मह लड़की... सबसे अनोखी थी...इस लड़की में कुछ... जरूर था जिसे 'महान' कहा जा सकता...

इसके बाद सरिता निरंतर पढ़ने... लगी लेकिन पिताजी और माँ ने कभी... उसको सन्देह की दृष्टि से नहीं देखा... कामिनी भैया को जरूर सरिता के ब... छेड़ती रहती थी—विनोद की बुआ स... को सन्देह की दृष्टि से देखती थी...स... को देखते ही वह नाक-भौंह चढ़ा लेती थ... अपनी छोटी बेटी राधा को उन्होंने स... से बात करने की बिल्कुल मनाही कर ... थी क्योंकि उनके विचार में सरिता आव... लड़की थी जो घंटों रात को एक पराये ल... के कमरे में पढ़ती रहती थी...उनका वि... था कि सरिता की माँ भी अच्छी औरत... होगी...अगर वह अच्छी औरत होती... जवान लड़की को इतनी आजादी न देती...